चन्दामामा
मई १९६६
75 P

दुधमुँहे
बच्चों के लिये
डाबर
की नई देन....
डाबर
जन्मघूँटी
डाबर
(डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२६

मई १९६६

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ०-७५ पैसे वार्षिक चन्दा रु. ८-४० पैसे

नुसेकोस
प्लास्टिकले

बच्चों के लिये एक खिलौने बनाने का अद्भुत रंग बिरंगा मसाला जो बार-बार काम में लाया जा सकता है। १२ आकर्षक रंगों में सर्वत्र प्राप्त है।

नर्सरी स्कूल व होम इक्विपमेन्ट कम्पनी
पोस्ट बाक्स नं १४१६, दिल्ली-६

चेहरे की
सुन्दरता
बढ़ाने के
लिए

गेवाबॉक्स अपनी तरह का एक उत्कृष्ट कैमरा है जिसकी पूरी बॉडी इस्पात से बनाई जाती है—बढ़िया इस्पात से। इसके टूटने, मुड़ने या दबने का डर नहीं रहता...और यह बरसों काम करता है। यही नहीं—**गेवाबॉक्स** से उतारी गई तस्वीरें स्वाभाविक रूप से **बढ़िया** होती हैं।

इन उल्लेखनीय विशेषताओं के कारण **गेवाबॉक्स** सबसे बढ़िया कैमरा माना जाता है—

- ☐ **चमकदार, साफ़ आइ-लैवल व्यूफ़ाइन्डर से मनचाही 'कम्पोज़ीशन' की जा सकती है, तस्वीर जल्द और आसानी से उतारी जा सकती है।**
- ☐ **३ स्पीड (बल्ब, १/५० वाँ और १/१०० वाँ सेकन्ड) फ़ास्ट एक्शन की तस्वीर उतारी जा सकती है।**
- ☐ **२ एपर्चर (एफ़ ११ और एफ़ १६) 'फ़ोकसिंग डेप्थ' के लिये।**
- ☐ **बढ़िया और चौरस तस्वीर—प्रत्येक ६ सी एम × ९ सी एम जितनी बड़ी, दूसरे कैमरों से उतारी गई तस्वीरों से ५०% बड़ी। एन्लार्जमेन्ट भी बढ़िया बनते हैं।**

और इसके अतिरिक्त **गेवाबॉक्स** को चलाना सबसे ही आसान काम है। आप सिर्फ़ 'क्लिक' कीजिए, बाक़ी का काम **गेवाबॉक्स** खुद कर लेगा। अपने ए पी एल डीलर से इसे चलाकर दिखाने के लिये कहिये। मूल्य: रु. ४४.००

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

आदमी, स्वार्थ के लिए क्या नहीं करता...? कहा जाता है।

क्योंकि मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी है—इसलिए जो कुछ इसकी पूर्ति के लिए वह करता है, उसे सह भी लिया जाता है।

पर जब व्यक्ति का स्वार्थ समाज के स्वार्थ से टक्कर खाता है, तो व्यक्ति का स्वार्थ एक घोर अपराध है।

स्वार्थ की सीमा है। यह भी नैतिकता द्वारा अनुशासित है। यह सत्य इस अंक में प्रकाशित "पानी की कमी" कहानी भली भाँति निरूपित करती है।

वर्ष: १७ मई १९६६ अंक: ९

भारत का इतिहास

अफ़ज़ल खान की मौत के बाद शिवाजी की दृष्टि दक्षिणी कोंकण और कोल्हापुर की ओर गई। परन्तु जुलाई १६६० में सौदीजौहार के नेतृत्व में बीजापुर की सेना ने शिवाजी के पनहला किले को घेर लिया।

शिवाजी को वह किला छोड़ना पड़ा। इतने में उस पर एक और आपत्ति आयी। दक्खन के नये गवर्नर शैस्तखान ने पूना पर आक्रमण किया। चाकन किले पर कब्जा कर लिया। कल्याण के ईलाके से मराठाओं को भगा दिया।

परन्तु शिवाजी ने मुगलों से निबटने के लिए बीजापुर से सन्धि कर ली। इस विषय में शिवाजी को अपने पिता की मदद मिली। वह बीजापुर में तब प्रमुख सरदार थे। दो वर्ष तक शिवाजी और मुगल सेनाओं में युद्ध होते रहे। १५ अप्रैल, १६६३ को शिवाजी कुछ साथियों के साथ छुपे छुपे पूना में शैस्तखान के महल में घुसा। वहाँ के अंगरक्षक और दासियों से बचकर वह सीधे गवर्नर के शयन कक्ष में गया। उसे घायल किया। उसके लड़के को मरवा दिया। एक सरदार को और चालीस सेवकों को मार दिया। अन्तःपुर की छः स्त्रियों को भी मार दिया। और वहाँ से सुरक्षित सिंहगढ़ दुर्ग चला गया। शैस्तखान मरा तो नहीं, पर उसका अंगूठा कट गया।

इस साहसिक कार्य के कारण शिवाजी की कीर्ति और प्रतिष्ठा बढ़ी। उसने जल्दी ही एक और इस प्रकार का कार्य किया। जनवरी १६-२०, १६६४ के बीच शिवाजी ने सूरत पर हमला किया। उसे

लूटा। पश्चिम तट पर उससे बड़ा कोई बन्दरगाह न था।

शिवाजी के इन कृत्यों के कारण दक्षिण में मुगलों का रौब कम हुआ। इसलिए १६६५ में औरंगजेब ने शिवाजी को जीतने के लिए कुछ सेना भेजी। अम्बर का राजा जयसिंह और दिलेरखान उस सेना के सेनापति थे।

जयसिंह युद्धतन्त्र में और राजनीति में प्रवीण था। उसने पुरन्दर दुर्ग को घेर लिया। मुगलों ने शिवाजी की राजधानी, राजगढ़ किले को भी घेर लिया। मुगलों से युद्ध करने में जो कुछ हानि-लाभ सम्भव थे, उनके बारे में सोच-साचकर शिवाजी ने जून २२, १६६५ में जयसिंह से, पुरन्दर के पास सन्धि कर ली। अपने तेईस किले उसने मुगलों को दे दिये। केवल १२ ही अपने पास रखे। वह मुगलों को ५००० घुड़सवारों को भी देने के लिए मान गया। बाद में जब जयसिंह ने बीजापुर पर आक्रमण किया, तो उस आक्रमण में शिवाजी ने भी हिस्सा लिया। जयसिंह ने शिवाजी को बहुत-सी आशाएँ दीं और उसको आगरा जाने के लिए मना लिया।

शिवाजी अपने लड़के शम्भूजी को लेकर ९ मई, १६६६ में आगरा पहुँचा।

परन्तु मुगल दरबार में शिवाजी का बड़ा अपमान हुआ। औरन्गजेब ने उसको केवल पाँच हज़ार सैनिकों के सरदार का पद देने के लिए माना। शिवाजी यह अपमान सह न सका। उसने आपत्ति की। वह मूर्छित हो गया। होश आने पर उसने बादशाह की निन्दा की। बादशाह ने उसको कैद कर लिया। और कोई होता तो शायद उस हालत में हताश हो जाता। तब शिवाजी ने एक चाल

चली। कैद में उसकी बीमारी ठीक हो गई थी, यह कहकर रोज़ ब्राह्मणों के लिए वह बड़े बड़े टोकरों में फल और मिठाइयाँ बाहर भेजता। कुछ दिनों बाद, पहरेदारों ने टोकरों को बिना देखे ही बाहर भेजना शुरू कर दिया। शिवाजी और उनका लड़का एक एक टोकरे में बैठकर जेल से बाहर निकल गये। मुगल भेदियों की आँखों में धूल झोंककर चले गये। अपने लड़के को एक महाराष्ट्र ब्राह्मण के घर रखकर शिवाजी भिखारी के वेश में अलहाबाद, काशी, गया, तेलन्गाना होते हुए ३० नवम्बर, १६६६ में अपनी जगह पहुँचा।

इसके बाद तीन साल तक शिवाजी ने मुगलों से छेड़-छाड़ न की। इस बीच औरन्गजेब ने उसको राजा की उपाधि दी। बिरार में एक जागीरदारी भी दी। १६७० में शिवाजी और मुगलों में फिर झगड़ा शुरू हुआ। शिवाजी ने जो किले पहिले मुगलों को दिये थे, प्रायः वे सभी फिर जीत लिये। १६७० में उसने फिर सूरत को लूटा।

१६ जून, १६७४ में शिवाजी ने छत्रपति की उपाधि के साथ, राजगढ़ के राजा के रूप में अपना राज्याभिषेक करवाया। उसने गोलकोन्डा के सुल्तान से दोस्ती करके, एक ही वर्ष में जिंजी, वेल्लूर और उसके आस पास के प्रदेश को जीता (१६७७)। शिवाजी की कीर्ति के साथ उसका राज्य भी विस्तृत हुआ। उसमें १०० किले थे। वह जब ५३ वर्ष का था और उच्च दशा में था, तभी १४ एप्रिल १६८० में उसकी मृत्यु हो गई।

नेहरू की कथा

[२२]

लोगों की नज़र अधिक स्वराजिस्टों और प्रान्तीय शासन सभाओं की ओर रहने लगी। जो शासन सभा के लिए निर्वाचित हुए थे, वे क्या करने जा रहे थे, किसी को न मालूम हुआ। उन्होंने बजट पास न किया। पर वायसराय के दस्तखत के साथ वह कानून बन गया।

उसी तरह प्रान्तीय विधान सभाओं में, जिन विधेयकों को पास न किया गया, वे गवर्नरों के दस्तखतों के साथ कानून बना दिये गये। स्वराजिस्टों का काम खतम-सा हो गया। अब जो कुछ होना था, वह शासन सभाओं से बाहर ही किया जा सकता था।

१९२४ में, अहमदाबाद में, कान्ग्रेस कमेटी की मीटिंग हुई। इस अधिवेशन में, गान्धी जी और स्वराजिस्टों में मतभेद अधिक हो गये। मोतीलाल और दास आदि के साथ कई लोग चले गये। गान्धी जी को तब यह भी मालूम हुआ कि कई कान्ग्रेसवादियों को अहिसा में पूर्ण विश्वास न था।

आखिर, उन्हें अपने आशीर्वाद देकर, वे राजनीति से अलग हो गये। कहा गया कि उनका युग समाप्त हो गया था। कहा गया कि मोतीलाल और दास ने मिलकर गान्धी जी को पीछे हटा दिया था। पर ये सब बातें झूटी थीं। लोगों में गान्धी जी का प्रभाव बिल्कुल कम न हुआ था। यही नहीं, वह निरन्तर बढ़ता भी जा रहा था। स्वराजवादियों का उत्साह भी घटता जा रहा था। पहिले तो

मोतीलाल ने शासन सभा के कार्यकलाप में बड़े ज़ोर शोर से काम किया। स्वराजवादियों को और पार्टियों का सहयोग भी मिला। पर साथ कठिनाइयाँ भी पैदा हुईं। कान्ग्रेस की "शक्ति" बढ़ाने के लिए ऊटपटांग आदमियों को सदस्य बनाया गया। इतने में चुनाव आये। उसके लिए धन की आवश्यकता थी। रईसों की खुशामद करनी पड़ी। उनमें से कई को, स्वराजवादियों ने उम्मीदवार के रूप में भी खड़ा किया। इस तरह मानों पार्टी में कीड़ा लग गया हो। धीमे धीमे अनुशासन कम होने लगा।

सरकार ने कुछ को अपनी ओर करके, पार्टी में फूट डाल दी। कुछ जाकर विरोधी पक्ष में जा मिले। मोतीलाल क्रुद्ध हुए, पर वे कुछ न कर सके।

१९२१-२२ में जवाहर के साथ जो जेल गये थे, उनमें से कई मन्त्री हो गये थे। वे कान्ग्रेस के नेताओं से झगड़कर, उनके कैद में डालने तक तैयार हो गये।

१९२४ बेलगांव में, कान्ग्रेस का जो अधिवेशन हुआ, उसके अध्यक्ष गान्धी जी थे। उनका अध्यक्षीय भाषण, जवाहरलाल जी को पसन्द न आया। वह उत्तेजक न था। अधिवेशन के बाद, गान्धी जी की इच्छा पर, अगले वर्ष का मन्त्री का काम जवाहर जी को सौंपा गया। जवाहर यद्यपि यह काम नहीं चाहते थे, तो भी यह काम उनको लेना पड़ा।

१९२५ गरमियों में, मोतीलाल को दमा तंग करने लगा। वे सपरिवार, डलहौजी चले गये। जवाहर भी वहां थे। एक दिन वहाँ चित्तरंजन दास की मृत्यु की खबर पहुँची। मोतीलाल इतने स्तब्ध हो गये कि घंटों उनके मुख से बात तक न निकली। ऐसा लगा, मानों उनका दाहिना

हाथ यकायक बेकाम हो गया हो। वह भार जो दोनों तब तक उठाते आये थे, अब उनको अकेले उठाना पड़ा।

मजहबी झगड़े फसाद कान्ग्रेस के लिए एक समस्या-सी बन गये। जवाहर सारे भारत की स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन कर रहे थे। अब उनको साफ़ मालूम हो गया, कैसे ये धार्मिक झगड़े राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता में विघ्न-से थे।

हिन्दु मुस्लिमों के झगड़ों के बहुत-से कारण थे। बकर ईद के त्यौहार पर मुसलमान जब गौओं की हत्या करते, तो हिन्दू यह देख न पाते। रोज पाँच बार नमाज़ पढ़नेवाले मुसलमानों को यह न गँवारा था कि उनकी मस्जिदों के सामने बाजे गाजे सुनाई पड़े। यदि मोहर्रम के दिन हिन्दुओं का कोई त्यौहार आता, तो अवश्य झगड़ा होता। चान्द्रमान के अनुसार मोहर्रम कब आयेगा, यह पहिले कहना कठिन था।

इतने कारणों से इतनी सारी हत्याओं का हो जाना ठीक नहीं लगता। परन्तु उधर इस फूट को उकसाकर, ब्रिटिश अपनी सरकार कायम रखना चाहते थे। वे इन
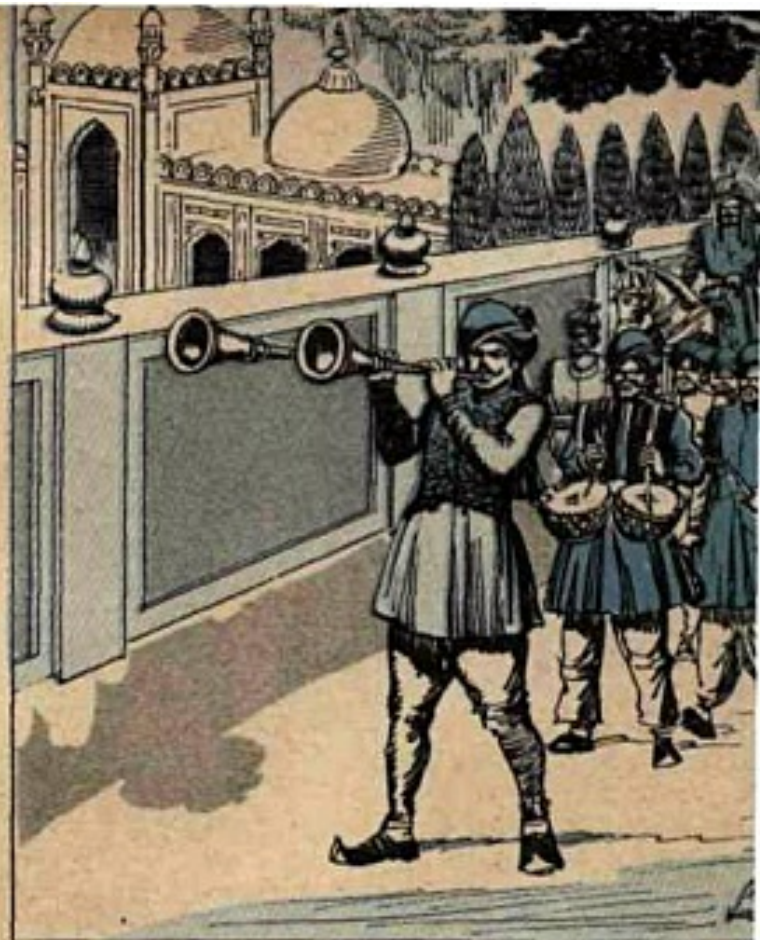
झगड़े फसादों को जान बूझकर भड़काया करते।

दोनों धर्मावलम्बियों में अनुदार व्यक्तियों को प्रमुखता मिली। उनका न स्वतन्त्रता के आन्दोलन से कोई सम्बन्ध था, न जनता के कल्याण से ही। इन अनुदार नेताओं का कर्तव्य धार्मिक कट्टरता लोगों में पैदा करके स्वतन्त्रता के आन्दोलन को रोकना ही था।

मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दू रईस हैं और मुसलमान गरीब। बेन्गाल में ज़मीन्दार हिन्दू हैं और

मुसलमान किसान। पंजाब और सिन्ध में साहुकारा हिन्दू करते हैं और मुसलमान कर्जदार हैं। ऐसी जगह मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काना आसान था। झगड़े फसादों से मुसलमान धनी तो नहीं होता। पर इनसे राष्ट्रीय आन्दोलन को अवश्य धक्का पहुँचता।

यह हालत राजनैतिक दृष्टि से इस तरह बिगड़ी कि पदों के लिए छीना-झपटी, चुनाव के लिए लड़ाई झगड़ा भी एक प्रकार का राजनैतिक आन्दोलन हो गया। कान्ग्रेस में बहुत-से मुसलमान थे। उनमें कई राष्ट्रवादी भी थे। उन्होंने "राष्ट्रीय मुसलमानों की" संस्था भी चलायी, पर वे सब, ऊँचे और बीच के तबकों के ही लोग थे। मामूली जनता में उनकी कोई धाक न थी। मजहबी मुस्लिम नेताओं का मुकाबला नहीं कर सकते थे। परन्तु शुरु शुरु में साम्प्रदायिक एकता के लिए उन्होंने काफ़ी प्रयत्न किया।

गान्धी जी ने जब तीन सप्ताह के लिए उपवास प्रारम्भ किया तब कान्ग्रेस अध्यक्ष मोहम्मद अलि ने १९२४ में एक "यूनिटी कान्फ़रेन्स" आयोजित की। एकता की स्थापना के लिए बहुत-से मसविदों पर सोचा गया। पर एक भी न माना गया। इस प्रकार की समस्या, इस तरह के कान्फ़रेन्सों से न सुलझनेवाली थी।

यह सभा दिल्ली में अभी ठीक तरह खतम भी न हुई थी कि अलहाबाद में हिन्दु-मुस्लिम दंगे शुरु हो गये। दिल्ली से जवाहरलाल जल्दी अलहाबाद पहुँचे। तब फसाद तो खतम हो गये थे, पर उनका विष प्रभाव हमेशा के लिए रह गया।
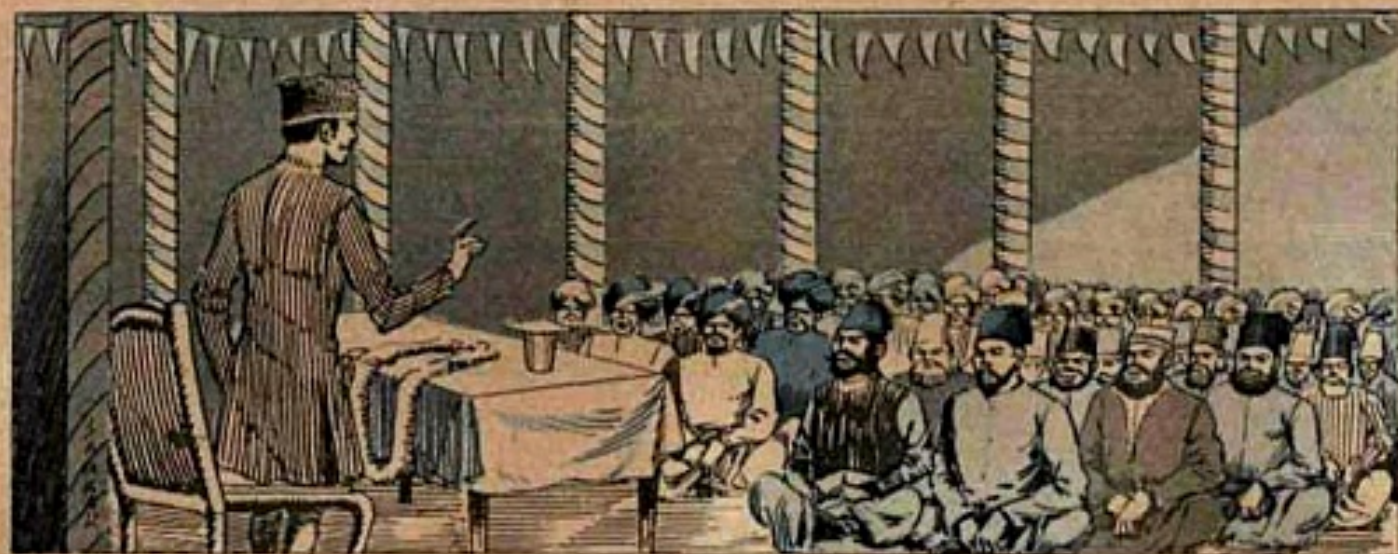
नवाबनन्दिनी

[९]

डूबती नौका से गिरे हुए लोगों को बचाने के लिए दूसरी नौकाओं में से बहुत-से आदमी नदी में कूदे। उस्मानखान भी पानी में डूबा। बहुत देर बाद जब वह ऊपर उठा, तो ऐसा लगा, जैसे उसको कोई चीज़ नीचे खींच रही हो। एक नौका उसके पास आई, पर वह उस पर न चढ़ सका। नाव में से, जब एक कपड़ा लटकाया गया, तो उसने उसे पकड़ लिया। उसे फिर धीमे से ऊपर खींचा गया। उसके साथ अयाशा भी ऊपर खिच आई पर उसमें बिल्कुल होश न था।

परन्तु अयाशा मरी भी न थी। उसके फिर होश में लाने के लिए काफ़ी समय लगा। काश्मीर बेगम ने बिना नीन्द के, खाने के, उसकी दिन रात सेवा की। वह सुलेमानखान भी, जो पी पाकर मस्त पड़ा रहता था, अयाशा पर दुःखी हुआ। वह पीना छोड़ बैठा और उसके स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित रहने लगा। उस्मानखान के बारे में अलग कहने की ज़रूरत ही नहीं है। वह चौबीस घंटे अयाशा के कमरे के पास के बरान्डे में ही रहने लगा। अयाशा धीमे धीमे स्वस्थ होने लगी।

दामोदर मुखर्जी

बिस्तर पर से उठकर, इधर उधर हिलने डुलने लगी। उसने एक दिन उस्मान को अपने कमरे में बुलवाया। कमरे में सिवाय उसके और कोई न था। सिवाय उसके पलंग के वहाँ बैठने को और कुछ था भी नहीं। अयाशा की अनुमति पर उस्मानखान भी उसी पलंग पर एक तरफ़ बैठ गया।

अयाशा ने बिना उसकी आज्ञा के दूर देश जाने के कारण, उससे माफ़ी माँगी।

"मैंने कभी न सोचा था कि तुमने कोई बड़ी गल्ती की है। तुम्हारे फिर आते ही, मुझे ऐसा लगा, जैसे मेरे शरीर में फिर प्राण आ गये हों। माफ़ी वाफ़ी की कोई ज़रूरत नहीं है।" उस्मान ने कहा।

"जब मैं नहीं थी, तब हमारी किस्मत ही चल गई। क्या तुम इस बारे में चिन्तित हो?"

"तुम गई और तुम्हारे साथ हमारी किस्मत भी चली गई।"

"क्या इसके लिए कोई और उपाय नहीं है?"

"यदि तुम भला चाहो, तो उपायों की क्या कमी है?"

"क्या तुम नहीं जानते कि मेरे सुख दुःख तुम पर निर्भर हैं?"

"जानता हूँ, तभी इस शरीर में प्राण है। परन्तु बुरी हालत में, तुम हमें क्यों छोड़कर चली गई थी?"

"यह बात तुम यदि न पूछते, तो बहुत अच्छा होता। युवराज जगतसिंह को कैद से छुड़ाने के लिए गई थी। पहिले पटना गई। फिर आगरा।"

"मैं यह बात जानता तक नहीं। तुम्हारा यह प्रयत्न, शायद एक तरह से मेरे अनुकूल ही है।" उस्मान ने कहा।

"कैसे?"

"जगतसिंह को मारना मैंने अपने जीवन का उद्देश्य बना रखा है। यदि वह ज़िन्दगी-भर कैद में रहता, तो मेरी यह इच्छा पूरी न होती। उसको तुम्हारा छुड़ाना मेरी मदद करना ही है। तुमने मुँह क्यों मोड़ लिया? क्या तुम्हें मेरी बातें सुनकर तकलीफ़ हो रही है?"

"नहीं तो, मैं यह सोच रही हूँ कि खुदा ने आखिर मुझे क्यों बनाया है? मेरे कारण, सिवाय फूट और फसाद के कुछ और नहीं हुआ। तुम जैसा उत्तम पुरुष, अन्दर ही अन्दर मेरे लिए जला जा रहा है।"

"इस प्रकार जल जाना मेरे लिए आनन्द ही है, नहीं तो मैं आसानी से उसको शान्त कर सकता था। यही काफ़ी है, यदि तुम मेरे पास रहो।"

"मेरे कारण, तुम तकलीफ़ उठा रहे हो, फिर भी तुम मुझे मरने से क्यों बचाते हो?"

"जगतसिंह को छुड़ाने के लिए, तुम जाने कहाँ कहाँ गई, अगर तुम मर मरा जाती, तो क्या मैं पगला न जाता।"

जगतसिंह को जेल से छोड़ दिया गया। मानसिंह की प्रतिष्ठा पर भी कोई धब्बा न लगा। वह राजोचित वस्त्र पहिनकर दरबार में गया। उसने पिता को नमस्कार करके उनसे क्षमा माँगी।

"बेटा, तुम्हारी सब गलतियों को अकबर बादशाह ने माफ़ कर दिया है।" मानसिंह ने कहा।

जगतसिंह जेल से ही नहीं छोड़ा गया, बल्कि उसको बंगाल, बिहार, उड़ीसा का सूबेदार भी नियुक्त किया गया। बादशाह ने मानसिंह को बुलवा लिया। उसके बाद, उसको क्या काम दिया जायेगा, किसी को न मालूम था। पिता की आज्ञा पर जगतसिंह, पिता के सिंहासन पर आसीन हुआ। दरबारियों ने नये सूबेदार का स्वागत किया।

सभा के समाप्त होने पर, पिता और पुत्र घर गये। वहाँ ऊर्मिलादेवी के महल में जगतसिंह और तिलोत्तमा फिर मिले। तिलोत्तमा ने सब बता दिया कि कैसे विमला उसको ऊर्मिलादेवी के पास छोड़ गई थी और कैसे उन्होंने उसको अपनाया था।

मानसिंह सपरिवार पटना छोड़कर, आगरा जाते हुए मानसिंह के साथ के

"उस्मान, मैं तुम्हें मनाती हूँ। तुम अपना दिल मुझसे हटाकर, अपने काम पर लगाओ। तुम वीर हो, योद्धा हो, साहसी हो। अपनी बहादुरी दिखाकर....साम्राज्य प्राप्त करो।"

उस्मान को, उससे शादी करने का भाग्य तो न था। परन्तु उसके साथ रहकर, उसके कष्ट सुखों में सहभागी होने में उसे कोई एतराज न था, अयाशा ने कहा। उस्मान ने कहा कि यदि उसने ऐसा किया, तो वह फिर खोये हुए राज्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा।

लिए, उसको छोटे भाई महासिंह को छोड़ता गया। तिलोत्तमा की तरफ़ के लोग विमला, अस्मानी, लक्ष्मणी, दिग्गज आदि और दास दासी पटना चले आये।

जगतसिंह का शासन कुछ समय तक शान्तिपूर्वक चलता रहा। उसका जीवन आनन्द के साथ गुज़रता गया। फिर रामचन्द्र देव के यहाँ से एक बड़ी बुरी खबर आयी—उस्मान फिर युद्ध के लिए तैयारी कर रहा था। जगतसिंह ने सोचा कि उड़ीसा में फिर अराजकता फैलनेवाली थी। जल्दी ही, फिर एक और खबर मिली कि उस्मानखान ने पुरी पर आक्रमण कर दिया था। रामचन्द्र देव ने एक और किले में जाकर शरण ली। उस किले पर भी पठानों के आक्रमण करने की आशंका थी।

महासिंह ने इन पठानों का दमन करना अपना कर्तव्य समझा। वह बड़ी सेना लेकर उड़ीसा की ओर निकला, भद्रक के पास दोनों सेनाओं का युद्ध हुआ। उस्मान ने बड़े उत्साह से युद्ध किया और मुगल सेनाओं को बुरी तरह शिकस्त दी। अपने सैनिकों के साथ महासिंह को भी पीछे भागना पड़ा।

फिर सारा उड़ीसा पठानों के नीचे आ गया। अयाशा के प्रोत्साहन पर, उस्मानखान बंगाल पर भी आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा। चूँकि महासिंह, उस्मानखान का मुकाबला न कर पाया था, इसलिए जगतसिंह को भी मैदान में उतरना पड़ा।

जल्दी पठानों ने मंजिनीपुर, कौल्हान को पूरी तरह वश में कर लिया और भी कई ईलाकों पर हमला किया। जब जब युद्ध होता, तब तब उस्मान की ही विजय होती। उसके शत्रुओं ने ही, उसके शक्ति साहस की प्रशंसा की। लोगों ने सोचा कि उड़ीसा की तरह बंगाल भी उनके वश में हो जायेगा।

अयाशा के सन्तोष की कोई सीमा न थी। वह मैदान में तलवार लेकर लड़ नहीं रही थी अन्यथा युद्ध में पूरा हिस्सा ले रही थी। उस्मानखान को इससे बड़ा ढ़ाढ़स मिला। जगतसिंह ने सोचा कि आमने सामने लड़कर, जगतसिंह को हराना उसके लिए सम्भव न था, इसलिए उसने उसको लुके छुपे मरवाने का उपाय सोचा। आखिर, एक उपाय सोच भी निकाला।

यदि वर्धमान को जीत लिया गया, तो सारा बंगाल देश उस्मानखान के नीचे आ जायेगा। यदि मन्थारण दुर्ग को वश में कर लिया गया और वहां छावनी बना ली गई, तो वर्धमान को जीतना आसान था। इसलिए उस्मानखान ने कुछ सेना मन्थारण के किले पर हमला करने के लिए भेजी। उस समय जगतसिंह वर्धमान में था और यह बात उस्मान को भी मालूम थी। उस्मानखान ने अपने सैनिकों को यह कहकर भेजा था कि हो सकता है, कभी जगतसिंह अपने ससुरालवालों को देखने आये, अगर आये, तो उसको जीवित पकड़ लिया जाये।
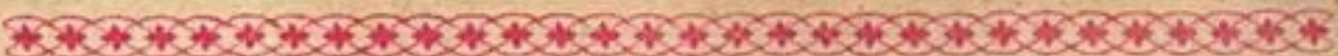
उस्मानखान के सैनिक मन्धारण के दुर्ग के आसपास के जंगलों में छुपकर उसकी राह देखते रहे, पर वह उस तरफ़ न गया। वह कुछ सैनिकों को लेकर, उड़ीसा की ओर निकला। जैसे भी हो, उस्मान को घेरकर वह उसको मार देना चाहता था। चूँकि उस्मान भी यही करना चाहता था, इसलिए वह भी कुछ सैनिकों को लेकर, इधर उधर गश्त करने लगा।

एक दिन जगतसिंह को उस्मानखान का ठिकाना मालूम हो गया। वह कुछ सैनिकों के साथ सुवर्ण रेखा नदी के तट के पास था। तुरत जगतसिंह अपने सैनिकों को लेकर, वहाँ जाने के लिए निकल पड़ा। जगतसिंह को आता देख, उस्मान ने यह दिखाने के लिए कि वह लड़ना न चाहता था एक सैनिक को सफेद झंडा देकर, जगतसिंह के सामने भेजा। सफेद झंडा लानेवाले सैनिक ने, जगतसिंह से कहा—"आपके और हमारे सैनिकों में अगर युद्ध हुआ, तो किसी का कोई लाभ न होगा। हमारे नवाब ने कहला भेजा है कि मौजूदा हालात में अच्छा होगा, यदि आपका हमारे नवाब से द्वन्द्व युद्ध हो।"

जगतसिंह ने अपनी सम्मति उस्मानखान के पास भेज दी। उस्मानखान सशस्त्र होकर वहाँ आया।

दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। दोनों तरफ़ के सैनिक दूर खड़े युद्ध देख रहे थे। दोनों कुछ कुछ घायल हुए। पर एक बार उस्मान का भाला जगतसिंह को मिला, उसने, उस्मान के सिर का निशाना बनाकर, उस भाले को फेंका। उसकी चोट से उस्मान का सिर चकरा गया। आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। वह निश्चेष्ठ हो खड़ा रहा। उसी समय जगतसिंह ने दूसरा भाला उस्मान की छाती पर ज़ोर से मारा।

उस चोट से उस्मान को तभी मर जाना चाहिए था। परन्तु अयाशा सहसा भाले के रास्ते में खड़ी हो गयी। सब एक बार चिल्लाये, इस चिल्लाने के कारण, उस्मानखान को होश आया। उसने देखा कि वह भाला अयाशा की पीठ में घुस गया था। यह देख, जगतसिंह ने काँपते काँपते अपने हाथ ऊपर कर दिये।

अयाशा की प्राणों की रक्षा करने वैद्य आये तो, पर वे कुछ कर न सके। अयाशा ने उस्मान और जगतसिंह से विदा लेकर, आँखें मूँद लीं। जगतसिंह सिर झुकाकर आँसू बहाने लगा। उस्मान की आँखों से न आँसू निकले, न आह ही निकली, न कोई बात ही।

उस्मान का उत्साह, साहस और पठानों का भविष्य, अयाशा के साथ ही खतम हो गये थे। उड़ीसा, मुगलों के वश में आ गया। भारत देश में पठानों का साम्राज्य भी समाप्त हो गया। [समाप्त]

कृतघ्न

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, ज़रूर ये कष्ट तुम किसी और के लिए उठा रहे होगे? तुम्हें देखकर, मुझे बोधिसत्व की कहानी याद आ रही है। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उस बोधिसत्व की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

एक बार जब बोधिसत्व जंगल में घूम रहा था, तो एक बड़े कुँये में से, एक स्त्री का रोना सुनाई दिया। जब बोधिसत्व ने उसमें झाँककर देखा, तो उसमें एक स्त्री ही नहीं एक शेर और एक साँप और एक सुनहला पक्षी भी थे।

वेताल कथाएँ

"हम चार प्राणी हैं। इस कुँये में आ गिरे हैं। हमें बाहर निकालकर हमारी रक्षा कीजिये।" उस स्त्री ने बोधिसत्व से प्रार्थना की।

"तुम्हारा गिरना तो मैं समझ सकता हूँ। पर वह उड़नेवाला पक्षी इसमें कैसे गिर गया?" बोधिसत्व ने पूछा।

"शिकारियों के जाल में उसके पैर फँस गये थे। इसलिए वह अब उड़ नहीं सकता।" उस स्त्री ने कहा।

बोधिसत्व ने घास की एक रस्सी बना कर, कुँये में डाली और उसके सहारे चारों प्राणियों को बाहर खींच लिया। चारों को मनुष्य की भाषा में बातें करता देख, उसने पूछा—"तुम कौन हो? तुम्हारी क्या कहानी है?"

शेर ने इस प्रकार कहा—"हिमालय में वैदूर्य श्रृंग नगर में पद्मवेग विद्याधर का वज्रवेग नाम का लड़का हुआ करता था। वह बड़ा घमंडी था। हर किसी से उसका झगड़ा था। पिता की भी उससे न पटी। उसने उसे शाप दिया कि वह शेर हो जाये और कहा कि जो कोई उसका उपकार करेगा, उसका प्रत्युपकार करने के बाद ही वह शाप विमुक्त होगा।"

"महानुभाव, तुमने यह मेरा उपकार किया है। अगर कभी मेरी ज़रूरत हुई, तो मुझे याद करना, मैं आकर तुम्हारा प्रत्युपकार करूँगा और शाप विमुक्त हो जाऊँगा।" यह कहकर, शेर चला गया।

इसके बाद, पक्षी ने अपनी कहानी यूँ सुनाई—"वज्रदंष्ट्र नाम के विद्याधर राजा के पाँच लड़कियों के बाद एक लड़का था, जिसका नाम रजतदंष्ट्र था। एक बार जब उसकी बड़ी बहिन कोई वाद्य बजा रही थी, तो वह उससे वह छीनकर भाग गया। उसने

उसको शाप दिया कि वह पक्षी के रूप में जन्म ले और कहा कि जो कोई उपकार करेगा, अगर वह उसका प्रत्युपकार करेगा, तो उसे शाप विमुक्ति मिलेगी।

"मुझे यह शाप मिला हुआ है। जब कभी मेरी ज़रूरत हो, तो मुझे याद करना, मैं आकर प्रत्युपकार करूँगा और शाप से विमुक्त हो जाऊँगा।" यह कहकर पक्षी चला गया।

फिर साँप ने अपनी कहानी यूँ सुनाई-- "कश्यप आश्रम में, एक मुनि कुमार रहा करता था। उसका एक मित्र था। जब उसका मित्र जलाशय में स्नान कर रहा था, तो किनारे पर बैठे मुनि पुत्र ने एक साँप को आते देखा और उसको, मन्त्रशक्ति से झट बाँध दिया और जब स्नान करनेवाला जलाशय से बाहर आया, तो पास ही एक भयंकर साँप को देखकर, वह मूर्छित हो गया। होश आने पर उसने शाप दिया कि वह साँप हो जाये, उपकारी का प्रत्युपकार करने के बाद ही, वह शाप विमुक्त हो सकेगा।" उसने कहा।

"मैं ही शाप ग्रस्त मुनि पुत्र हूँ। जब मेरी ज़रूरत हो, तो मुझे याद करना, मैं तुम्हारा प्रत्युपकार करके, शाप विमुक्त हो जाऊँगा।" यह कह, साँप चला गया।

अन्त में स्त्री ने अपना वृत्तान्त बोधिसत्व को सुनाया। वह एक क्षत्रिय युवक की पत्नी थी। वह युवक राजा के यहां काम करता था। यह सोचकर कि उसकी पत्नी का चरित्र ठीक न था, उसने उसको शाप देने का निश्चय किया। चरित्रहीन पत्नी को यह बात अपनी दासी द्वारा मालूम हुई। यह डरकर कि न मालूम पति क्या करे, वह घर से भाग गई और रात में उस कुँये में जा गिरी। यह कहकर, वह स्त्री अपने रास्ते चली गयी।

चूंकि बोधिसत्व ने, उस स्त्री से बातचीत की थी, इसलिए वन में बोधिसत्व के लिए कन्द मूल दुर्लभ हो गये। उसे इतनी भूख लगी कि उसने शेर को याद किया। तुरत शेर आया। उसने उसकी हालत देखी। उसे, उसने हरिण का माँस लाकर दिया। उसकी भूख मिटाई। इस तरह शाप मुक्त होकर, वह विद्याधर रूप में अपनी जगह चला गया। बोधिसत्व ने चूँकि माँसभक्षण किया था, इसलिए उसकी तपस्या भंग हो गई। उसकी हालत औरों की तरह हो गई और वह द्रव्य के आधार पर जीने लगा।

उस समय उसने पक्षी को याद किया। पक्षी आया। उसने भी उसकी हालत देखी। उसकी ज़रूरत जानकर, उसने उसको कहीं से, एक पेटी लाकर दी, जिसमें रत्न वगैरह थे। उसने कहा—"तुम इसकी सहायता से, अपनी सारी ज़िन्दगी बसर कर सकते हो।" कहकर वह शाप विमुक्त हो गया और चला गया।

बोधिसत्व उन गहनों को बेचने के लिए पास के गोत्रवर्धन नाम के नगर में गया। उसको गली में वही स्त्री दिखाई दी, जिसकी उसने रक्षा की थी। उसने बोधिसत्व से कहा—"मैं यहाँ रह रही हूँ। रानी के यहाँ दासी का काम कर रही हूँ।"

नादान बोधिसत्व ने उसको अपने पास की गहनों की पेटी दिखाई और बताया कि सुनहरे पक्षी ने उसको कहीं से लाकर दिया था। उस चरित्रहीन स्त्री ने यह बात जाकर रानी को बताई। वह पेटी रानी की ही थी। इसलिए रानी ने उस स्त्री के साथ कुछ सिपाही भेजे और बोधिसत्व को पकड़वाकर बुलवाया। बोधिसत्व ने सच बता दिया। राजा जानता था कि वह सच ही कह रहा था। क्योंकि रानी ने गहनों की पेटी को

एक पक्षी को उठाकर ले जाते हुए देखा था। फिर भी राजा ने बोधिसत्व को छोड़ा नहीं, उसे कैद कर दिया।

कैद में बोधिसत्व ने साँप को याद किया। तुरत साँप आया और उसने भी बोधिसत्व की हालत देखी भाली। "मैं जाकर राजा के सिर पर लिपट जाऊँगा। जब तक तुम आकर छोड़ने के लिए नहीं कहोगे, तब तक मैं उसे नहीं छोड़ूँगा और तुम तब तक मुझे छोड़ने के लिए न कहना, जब तक वह तुम्हें आधा राज्य देने के लिए न माने।" वह सीधे राजा के पास गया। राजा सो रहा था। वह उसके सिर पर लिपटकर उसे जोर से दबाने लगा। यदि कोई उसके पास आता, या राजा को छुड़ाने की कोशिश करता, तो वह जोर से फुँकारता। राजा बड़ी आफ़त में फँस गया। उसने घोषणा की कि जो कोई उसे उस विपत्ति से छुड़ा देगा, वह उसको आधा राज्य देगा। कैद से बोधिसत्व ने राजा के पास खबर भिजवाई कि वह उसको साँप से छुड़ा सकता था, राजा ने बोधिसत्व को अपने पास बुलाया। उसने शपथ करके कहा कि यदि उसे उसने साँप से छुड़ा दिया, तो उसे आधा राज्य दे देगा।

तब बोधिसत्व ने उस साँप से कहा— "राजा को छोड़ दो।" तुरत साँप ने राजा को छोड़ दिया। शाप विमुक्त होकर वह फिर मुनि पुत्र हो गया। राजा ने बोधिसत्व को आधा राज्य दे दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा— "राजा मुझे एक सन्देह है। बोधिसत्व ने जिन चार प्राणियों का उपकार किया था, उनमें से तीन हीन जन्म के थे। फिर भी उन्होंने बोधिसत्व का प्रत्युपकार किया। परन्तु उत्तम जन्म की स्त्री ने उसका अपकार किया। इसका क्या कारण है? क्या मानवों से हीन प्राणी ही बेहतर हैं? या यह कि शाप से पहिले वे उच्च जन्म के थे? इन प्रश्नों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"भले ही जन्म में ऊँचे हो, पर दुर्व्यवहार के कारण ही वे शाप ग्रस्त हुए थे। चूँकि उन्होंने शाप का अनुभव किया था, इसलिए उनके दोष नष्ट हो गये। स्त्री को उसकी चरित्रहीनता के लिए दण्ड भी न मिला था, इसलिए उसका पाप कम नहीं हुआ। यही नहीं, बिना प्रत्युपकार के और तीनों की शाप विमुक्त भी न होती, पर स्त्री के बारे में ऐसी कोई बात न थी। यदि वह अच्छे प्रवर्तन की स्त्री होती, तो उपकार का प्रत्युपकार अवश्य करती। परन्तु उसका व्यवहार शुरु से ही खराब था। इसलिए ही उसने बोधिसत्व का अपकार किया।"

इस प्रकार राजा का मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित

दर्ज़ी की सूझ

एक बार बीरबल ने, अकबर बादशाह से बातों बातों में कहा—"कुछ पेशेवाले बड़े होशियार होते हैं। भले ही हम कितने ही चौकन्ने रहें, वे चकमा दे ही जाते हैं।"

"और चौकन्ने रहे, तो वे कैसे धोखा दे सकते हैं?" बादशाह ने पूछा।

"बहुत पहरेदारों के होते हुए भी, ऐसे सुनारों को मैंने देखा है, जो सोना चुरा लेते हैं और ऐसे दर्जियों को भी जानता हूँ, जो कुछ भी हो, कपड़ा चुरा ही लेते हैं।" बीरबल ने कहा।

बादशाह ने इस बात पर विश्वास नहीं किया। "मेरे पास एक बहुमूल्य रेशमी कपड़े का टुकड़ा है। उससे, बेगम के लिए एक चोली बनवायेंगे। रेशम मुश्किल से उसके लिए काफ़ी रहेगा। इसलिए दर्ज़ी उसे चुरा नहीं सकता। यही नहीं, हम उस पर पहरा भी लगायेंगे। क्या तुम कोई अच्छा दर्ज़ी जानते हो?"

"गुलाब नाम का एक दर्ज़ी है। वह बड़ा चुस्त कारीगर आदमी है। वह आपकी बेगम के लिए चोली बना भी सकता है और कपड़ा भी चुरा सकता है।" बीरबल ने कहा।

"तो उसे बुलवाओ। उसकी सूझ बूझ ज़रा परखी जाये।" अकबर ने कहा।

बीरबल ने दर्ज़ी को बुलवाया। उसे रेशम का टुकड़ा दिखाया। "क्या तुम इस कपड़े से, बेगम के लिए चोली बना सकोगे?" उससे पूछा।

दर्ज़ी ने कपड़ा देख-दाखकर कहा—"हाँ, बना सकता हूँ।" बीरबल ने कहा

कि महल में ही काम करना होगा। इस पर दर्ज़ी ने कोई एतराज न किया। उसको एक अलग कमरा दे दिया गया। वह अपने पेशे के सब औजार ले आया और वहीं काम करने लगा। जब वह काम कर रहा होता, तो हमेशा उसके पास दो तीन कर्मचारी रहते। कमरे के सामने दो पहरेदार तलवार लिये खड़े रहते। दर्ज़ी ने तीन दिन काम किया, पर चोली न बनी। चौथे दिन, दर्ज़ी का लड़का, घर से देखने आया। "तुम्हें घर आये तीन दिन हो गये हैं। माँ नाराज़ है।"

"अरे कर मुख बन्द। यह अपना घर नहीं है। बादशाह का महल है।"

"होगा, तो होगा। तुम यह बताओ कि घर कब आ रहे हो?" लड़के ने पूछा।

"यह चोली बनाकर...." पिता ने कहा।

"जो काम दो घंटे में हो सकता था, उसे तुम चार दिन से कर रहे हो।" लड़के ने पिता का परिहास किया।

"अरे, जानते हो, यह बेगम साहिबा की है। तुम यूँ ही न बको, जाओ घर। नहीं, तो गरदन तोड़ दूँगा।"

बाप बेटे की बात सुनकर, वहाँ जितने लोग खड़े थे, वे बड़े हँसे।

"मैं नहीं जाऊँगा—देखें, कैसे मेरी गरदन तोड़ते हो?" दर्ज़ी के लड़के ने उपहास किया। दर्ज़ी को गुस्सा आ गया। उसने अपना जूता उतारकर लड़के पर फेंका। दर्ज़ी का लड़का उसे लेकर भाग गया।

"उसे पकड़ो।" दर्ज़ी ने पहरेदारों से कहा। वे तमाशा देखते खड़े रहे। पर उन्होंने दर्ज़ी के लड़के को पकड़ने का प्रयत्न न किया।

शाम तक दर्ज़ी ने चोली बनायी और बादशाह को दे दी। बादशाह ने उसे

ले जाकर, बेगम को दी। "इस तरह की चोली दुनियाँ में और कहीं नहीं है।" दर्ज़ी की कारीगरी की बेगम ने बड़ी प्रशंसा की।

कुछ दिनों बाद, बेगम उस चोली को पहिनकर शहर में गई। एक जगह उसको एक स्त्री दिखाई दी। उस स्त्री ने भी ठीक वैसी ही चोली पहिन रखी थी, जैसे कि उसने पहिन रखी थी। वह गुस्से में महल आयी। "आपने कहा था कि मेरी चोली जैसी दुनियाँ में किसी और के पास नहीं है—कोई मामूली औरत, ठीक ऐसी ही चोली पहिनी हुई, आज शाम को मुझे दिखाई दी।" उसने बादशाह से कहा।

"असम्भव।" बादशाह ने कहा।

"मैंने खुद अपनी आँखों जो देखा है। क्या मेरी बात पर आपको यकीन नहीं है?" बेगम ने पूछा।

जब बेगम की बात पर पूछताछ की गई, तो मालूम हुआ कि दर्ज़ी गुलाब की पत्नी के पास भी बेगम की चोली-सी एक चोली थी। बादशाह ने दर्ज़ी और उसकी पत्नी को बुलवाया। "अरे

बेईमान! तुम हमारी ही आंखों में धूल झोंकते हो।"

"हुज़ूर! मेरी कोई खता नहीं है। आपने मुझ पर कड़ा पहरा रखवाया था, भला मैं कैसे चोरी कर सकता हूँ।" दर्ज़ी ने पूछा।

"तो, तुम्हारी पत्नी के पास कैसे वह चोली आई?" बादशाह ने पूछा।

"हुज़ूर! कपड़ा तो वही है। पर मैंने उसे चुराया नहीं है। जो हुआ था, ज़रा उसे गौर फरमाइये। मैं चार दिन बिना घर गये, महल में काम करता रहा। मुझे मेरा लड़का बुलाने आया और उसने लोगों के सामने बेअदबी से बात की। गुस्से में मैंने उस पर अपना जूता फेंका। वह उसे लेकर भाग गया। मुझे झट याद आया कि जो कपड़ा बच गया था, उसके टुकड़े उसमें थे, मैंने पहरेदारों को उसे पकड़ने के लिए कहा। पर उन्होंने मेरी बात न सुनी। जब मैंने घर जाकर देखा, तो जूते में कपड़ा नहीं दिखाई दिया। उससे मेरी पत्नी ने चोली बनवा ली और आज शाम ही मैंने उसे पहिने देखा। यदि मेरी पत्नी उसे न पहिनती, तो मैं अवश्य उसे लाकर आपको दे देता। हुज़ूर के फेंके हुए कपड़े पहिननेवाले ही हम लोग हैं। भला हम लोगों के कपड़े हुज़ूर कैसे छुयेंगे? यही बात है। हुज़ूर।" दर्ज़ी ने कहा।

उसकी सूझ बूझ पर बादशाह चकित हो गया। जब बादशाह को मालूम हुआ कि वह दर्ज़ी भी बीरबल की जगह का था, तो वह बड़ा खुश हुआ। उसने दर्ज़ी और उसकी पत्नी को ईनाम देकर भेज दिया।

शक्तिदेव

कभी वर्धमानपुर का परोपकारी नाम का राजा था। उसकी एक लड़की थी, जिसका नाम कनकरेखा था। वह बड़ी सुन्दर थी। ज्यों ज्यों उसकी शादी की उम्र आती गई, त्यों त्यों उसके पिता की चिन्ता बढ़ती गई। इस बारे में उसने एक बार अपनी पत्नी से भी कहा। तब उसकी पत्नी ने कहा—"आप क्यों लड़की की शादी के बारे में फिक्र करते हैं? वह तो शादी करने से इनकार कर रही है। कह रही है कि उसके भाग्य में शादी ही नहीं है। उसे डर है कि यदि उसकी शादी की गई, तो वह मर मरा जायेगी।"

ये बातें सुनकर राजा को बड़ा अचरज हुआ। उसने अपनी लड़की से पूछा—"क्यों बेटी? अप्सरायें भी चाहती हैं कि उनको अच्छे पति मिलें और तुम शादी ही नहीं करना चाहती हो। क्यों?"

कनकरेखा ने सिर झुकाकर कहा—"मैं अब शादी नहीं करना चाहती। अगर आपने दौड़ धूप करके मेरी शादी की भी तो इससे आपका क्या लाभ होगा? जिसकी फिक्र मुझे नहीं है, उसकी फिक्र आप क्यों करते हैं?"

"यह क्या? कन्यादान से बढ़कर क्या दान है? सयानी लड़की का पिता के घर रहना बड़ा पाप है।" राजा ने कहा।

"अच्छा, तो मैं शादी कर लूँगी। पर मुझ से शादी करनेवाला या तो ब्राह्मण हो, नहीं तो क्षत्रिय और यह भी ज़रूरी है कि उसने कनकपुरी देख रखी हो। जो कोई

इन दो शर्तों को पूरी करेगा, मैं उससे शादी कर लूँगी।" कनकरेखा ने कहा।

राजा बड़ा खुश हुआ। उसने सोचा कि आसानी से उसको लड़की के लिए वर मिल जायेगा। उसका विश्वास था कि ऐसे असंख्य ब्राह्मण और क्षत्रिय युवक होंगे, जिन्होंने कनकपुरी देख रखी होगी। अगले दिन दरबार में आते ही उसने पूछा—"क्या तुम में से किसी ने कनकपुरी देखी है?" कनकपुरी का देखना तो अलग, वहाँ किसी ने उसका नाम तक न सुना था। राजा को आश्चर्य हुआ। "यदि कोई ब्राह्मण या क्षत्रिय कनकपुरी देख ले, तो मैं उसके साथ अपनी लड़की का विवाह कर दूँगा।" राजा ने नगर में यह घोषणा भी करवा दी। यह घोषणा सब नागरिकों ने सुनी। पर एक भी राजकुमारी से विवाह करने के लिए तैयार न हुआ।

उस नगर में बलदेव नाम के ब्राह्मण का शक्तिदेव नाम का लड़का था। उसे जुये का व्यसन था। उस व्यसन के कारण वह अपना सारा धन भी खो बैठा था। उसी समय उसको राजा की घोषणा सुनाई दी। उसने सोचा कि यदि उसने झूट बोला कि उसने कनकपुरी देख रखी थी और उसका राजकुमारी से विवाह हो गया, तो उसकी सारी दिक्कतें खतम हो जायेंगी।

शक्तिदेव ने घोषणा करनेवालों के पास जाकर कहा—"मैंने कनकपुरी देखी है। मुझे राजा के पास ले जाओ।" वे बड़े खुश हुए और उसको वे राजा के पास ले गये। राजा ने उसको अपनी लड़की के पास भेजा।

कनकरेखा ने उससे पूछा—"क्या तुमने कनकपुरी देखी है?"

"देखी है।" शक्तिदेव ने कहा।

"वहाँ तुम किस रास्ते गये थे और कब गये थे? वह नगर कैसा है?" उसने प्रश्न किये।

"शिक्षा के लिए मैं नगर नगर घूमा हूँ और घूमता घूमता वहाँ भी गया था। यहाँ से हर पुर गया। वहाँ से वाराणसी और वहाँ से मोन्ड्र वर्धन और फिर कनकपुरी। वह इन्द्र नगरी-सी थी। मुझे ऐसा लगा जैसे वहाँ पुण्यात्मा ही बसते हों।" शक्तिदेव ने बिना झिझके हिचके कह दिया।

"इस धूर्त को पीट पीटकर भगा दो।" कनकरेखा ने अपने नौकरों से कहा। फिर अपने पिता से जाकर कहा—"यह ब्राह्मण युवक बिल्कुल झूटा है। उसने कनकपुरी देखी ही नहीं है। झूट बोलकर उसने हमें धोखा देने की सोची थी।"

झूट बोलने के कारण राजकुमारी द्वारा अपमानित होकर, शक्तिदेव ने सोचा कि कुछ भी हो, अगर सारा संसार ही देखना पड़ जाये, भले ही जान भी चली जाये, तो भी कनकपुरी देखकर राजकुमारी से विवाह करने का निश्चय किया। यह निश्चय करके वर्धमान से वह दक्षिण की ओर गया। विन्ध्या के जंगलों में घुसा।

चलते चलते उसको एक तालाब मिला। निर्मल जल के तालाब में उसने स्नान किया और उस तालाब के उत्तर तट के आश्रम में वह गया। वहाँ उसने एक पीपल के पेड़ के नीचे एक वृद्ध को देखा। उसने उससे पूछा—"स्वामी! मुझे कनकपुरी जाना है। पर मैं यह भी नहीं जानता कि वह कहाँ है? क्या आप जानते हैं?"

"मैं इस आश्रम में आठ सौ सालों से रह रहा हूँ। पर मैंने भी कभी कनकपुरी का नाम नहीं सुना है।" तपस्वी ने कहा।

"तो इसका मतलब हुआ कि मैं इस जीवन में उसे न देख पाऊँगा!" शक्तिदेव ने कहा।

उसकी सारी कहानी सुनकर, उस वृद्ध तपस्वी ने कहा—"मैं तुम्हें एक सलाह देता हूँ। यहाँ से तीन सौ योजन दूर काम्पिल्य देश है। उसमें उत्तम पर्वत के ऊपर, एक आश्रम में मेरा भाई है। शायद वह उस नगर के बारे में जानता हो। उससे पूछो।"

शक्तिदेव की आशा फिर जगी। वहाँ उसने वह रात काटी। अगले दिन सवेरे निकल पड़ा। नाना कष्ट झेलकर वह काम्पिल्य देश पहुँचा। उत्तर पर्वत के मुनि से मिला और उसे अपना काम बताया। उस मुनि ने भी कहा कि उसने कभी कनकपुरी का नाम नहीं सुना था।

"वह नगर शायद कहीं किसी द्वीप में होगा। समुद्र के बीच में उतस्थल नाम का द्वीप है। उसका राजा सत्यव्रत है। वह बहुत-से द्वीपों में जाना आना बनाये रखता है। इसलिए वह शायद कनकपुरी के बारे में कुछ जानकारी दे सके। यदि तुम समुद्र तट के किसी बन्दरगाह पर पहुँचे, तो कोई भी समुद्र व्यापारी तुम्हें उतस्थल पहुँचा देगा।" मुनि ने सलाह दी।

इस सलाह के मुताबिक विकटपुर पहुँचा। वहाँ उसने समुद्रदत्त नामक वैश्य से दोस्ती की। उसके जहाज़ में ही वह उतस्थल के लिए रवाना हो गया। जहाज़ द्वीप पहुँच ही रहा था कि एक बड़ा तूफ़ान आया और वह जहाज़ टूट गया। समुद्रदत्त एक लकड़ी के सहारे तैरता द्वीप में पहुँच गया।

शक्तिदेव को, जो समुद्र में डूब गया था, एक तिमिंगल निगल गई। वह मछली उतस्थल द्वीप के किनारे पर मछियारों को

मिली। चूँकि बहुत बड़ा मच्छ मिला था, इसलिए मछियारों ने जाकर, उसको राजा सत्यव्रत को भेंट में दिया। सत्यव्रत ने जब उसको उन लोगों से कटवाया, तो उसके पेट में से शक्तिदेव बाहर निकला।

मच्छ के पेट से, एक आदमी को बाहर निकला देख, सत्यव्रत को अचरज हुआ। उसने पूछा—"तुम कौन हो? तुम कैसे इस मच्छ के पेट में आ पड़े? क्या कहानी है तुम्हारी?" शक्तिदेव ने बताया कि उतस्थल द्वीप के सत्यव्रत से वह मिलने आ रहा था कि उसका जहाज़ टूट गया, वह समुद्र में डूब गया और मच्छ ने उसे निगल लिया था।

"मैं ही वह सत्यव्रत हूँ। मैंने बहुत से द्वीप देखे हैं, पर जिस कनकपुरी के बारे में तुम कह रहे हो, उसे कहीं नहीं देखा है। हाँ, किसी द्वीप में उसका नाम अवश्य सुना था।" सत्यव्रत ने कहा।

यह बात सुनते ही शक्तिदेव का मुख सिकुड़-सा गया। यह देख सत्यव्रत ने कहा—"फिक्र न करो। आज रात यहीं काटो। सवेरा होते ही, तुम्हारी इच्छा पूरी करने का कोई उपाय सोचेंगे।"
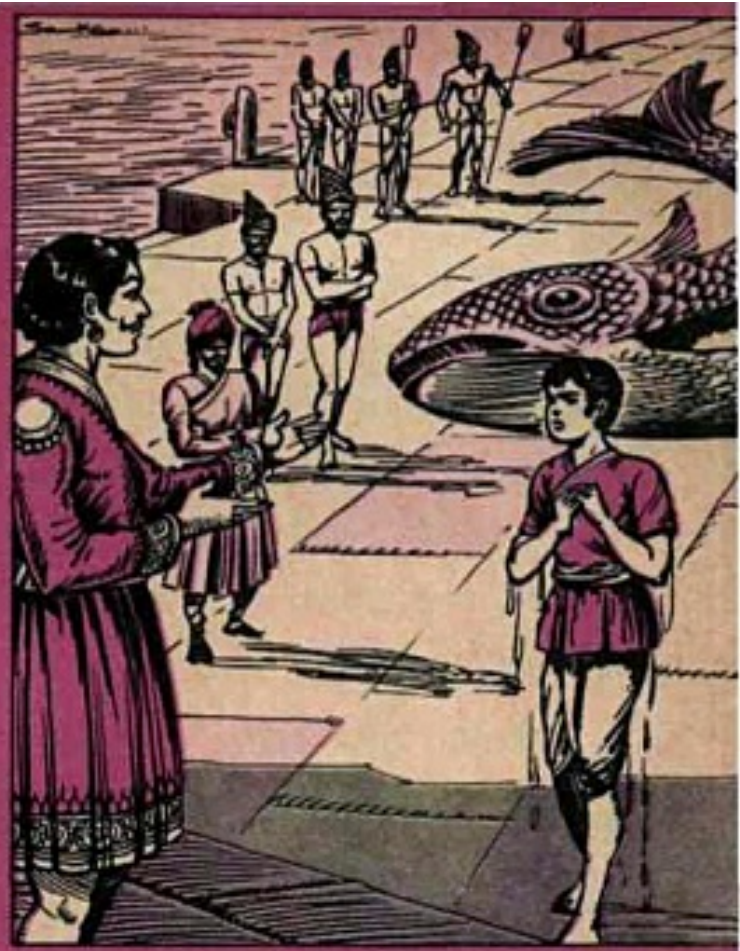
शक्तिदेव रात काटने एक मठ में गया। वहाँ भोजन करके, विष्णुदत्त नामक ब्राह्मण से उसने परिचय कर लिया। उससे गप्प करने लगा। उस ब्राह्मण ने शक्तिदेव की बात सुनी। फिर उठकर उसका उसने आलिंगन किया। "तुम मेरे मामा के लड़के हो। मैं बचपन में ही यहाँ चला आया था।" परदेश में बन्धु मिलने पर वह बड़ा ही खुश हुआ। वह रात उन्होंने बातों बातों में काट दी।

सवेरा होते ही सत्यव्रत, शक्तिदेव को मठ में देखने आया। "रत्नकूट द्वीप में

प्रति आषाढ़ शुद्ध द्वादशी के दिन उत्सव होते हैं। तब वहाँ बहुत-से द्वीपों से लोग आते हैं। चूँकि वह उत्सव अब नज़दीक आ गया है, मैं तुमको वहाँ ले जाऊँगा। वहाँ तुम्हें आसानी से वह, जानकारी मिल जायेगी, जिसके लिए तुम यहाँ आये हो। चलो चलें।"

शक्तिदेव मान गया। विष्णुदत्त से कुछ थोड़ा बहुत रुपया पैसा लिया और सत्यव्रत की नौका में सवार हो गया। जब थोड़ी दूरी पर पंखोंवाला महापर्वत दिखाई दिया, तो शक्तिदेव ने पूछा कि वह क्या था।

"वह वटवृक्षदेव है। उसके नीचे बड़ी भँवर है। वह बड़ी खतरनाक है। हमें उससे बचकर, दूर दूर ही जाना होगा।" सत्यव्रत ने कहा। पर तब तक भँवर में फंस गई थी। वह धीमे धीमे उस पेड़ की ओर जाने लगी।

"अरे, हम पर आफ़त आ पड़ी है। मुझे अपने बारे में कोई चिन्ता नहीं है। चिन्ता मुझे यह है कि तुम इतनी दूर आये भी और तुम्हारा काम भी न बना। जब नौका पेड़ के पास पहुँचे, तो पेड़ की टहनी पकड़कर, अपने प्राण बचाने की कोशिश करना।" सत्यव्रत ने कहा।

शक्तिदेव ने एक छलाँग-सी मारी और टहनी पकड़कर उस पर चढ़ गया। फिर नौका, सत्यव्रत के साथ भँवर में डूब गई। "कनकपुरी देखने मैं निकला हूँ और मछियारों के उस राजा को देख रहा हूँ, जिसने मेरे लिए अपने प्राण तक दे दिये हैं।" शक्तिदेव ने सोचा।

(अगले अंक में समाप्त)

पानी की कमी

पन्नालाल का मामा बहुत साल पहिले घर से चला गया था। वह हाल में वापिस आया था, पर उसके बच्चों ने उसे पास न आने दिया और वह पहाड़ों से परे कहीं था और बुढ़ापे में तरह तरह की मुसीबतें झेल रहा था, यह सुनने में आया। अपने भाई के बारे में यह सुनकर पन्नालाल की माँ को बड़ा कष्ट हुआ। "तुम जाकर हमारे बड़े भाई को बुला लाओ।"

पन्नालाल गाड़ी जोतकर अपने मामा को खोजने निकल गया। पहाड़ों में गाड़ी का रास्ता खतम हो गया। वहाँ से सिर्फ़ पैदल जाने का रास्ता था। इसलिए पन्नालाल ने अपनी गाड़ी और बैल एक गाँव के मुखिया के पास छोड़ दिये। बैलों के दाना चारे के लिए पैसे दिये। पैदल पहाड़ के उस तरफ़ आ गया।

जब वह पहाड़ के पार के मैदानों में पहुँचा, तो उसको कहीं से सिर पर पानी के घड़े रखे हुए, स्त्री और पुरुष आते दिखाई दिये। पन्नालाल यहाँ आने से पहिले कुछ रोटियाँ और लोटे में पानी ले आया था। पर वे रोटियाँ खतम हो गई थीं। रास्ते में, जो कोई दिखाई देता। उनसे वह पूछता—"क्या यहाँ आसपास कोई ढाबा है?"

"दस मील के फासले में कहीं कोई ढाबा नहीं है। यहाँ के लोग, अपना भोजन स्वयं पकाते हैं।" जवाब मिला।

"रसोई कर लूँगा, पर पकाने के लिए क्या कहीं चीज़ें मिलेंगी?" पन्नालाल ने पूछा।

"जो कुछ चाहोगे, वह भण्डारी के घर मिल जायेगा। उसके यहाँ दाम बहुत ऊँचे हैं, पर इस ईलाके में जो भी कुछ खरीदा जा सकता है, उसी के यहाँ से खरीदा जा सकता है। आखिर, पानी भी हमें उसी के कुँए में से लाना पड़ता है।" पन्नालाल को पता लगा कि भण्डारी पानी भी बढ़े चढ़े दाम पर बेच रहा था।

पन्नालाल ने पानी पीकर ही अपनी भूख मिटानी चाही, और एक आदमी से जो सिर पर घड़ा भर पानी ले जा रहा था, अपना लोटा भरने के लिए कहा। उस आदमी ने पानी देने से इनकार कर दिया। वह बिचारा भी क्या करता? वह घड़ा भर चार आदमियों के लिए एक रोज़ के लिए ज़रूरी था फिर वह मुफ्त का पानी भी न था।

एक और आदमी ने पन्नालाल से चार आने लेकर, पन्नालाल का लोटा भर दिया। उसे भी बुरा नहीं कहा जा सकता था। वह तीन मील से अधिक दूरी से एक घड़े भर पानी के लिए चार आने देकर उसे सिर पर ढोकर ला रहा था।

"क्यों तुम इतनी दिक्कतें झेलते हो? क्यों नहीं, तुम अपनी जगह कुँए खोद लेते?"

इस सारे प्रान्त का भण्डारी ही मालिक है। जब उसने और जगह कुँए खुदवाने की कोशिश की तो लोगों ने कहा कि यह ईलाका पथरीला था और यहाँ बून्द भर भी पानी न मिलेगा। यह बात भण्डारी ने ही बताई थी। कुछ भी हो वह भला आदमी कम से कम अपने कुँए का पानी दे रहा था, इसलिए लोग यहाँ जिन्दा थे।" पानी बेचनेवाले ने कहा।

जब कभी जबान सूख जाती तो उसे ज़रा गीला करता, भूख सहता, पन्नालाल आगे बढ़ा। वह ऊबड़ खाबड़ रास्ते पर जा रहा था तो एक गढ़े में एक बूढ़ा गिरा हुआ धीमे धीमे कराह रहा था—"पा....नी" पन्नालाल ने उसे देखा। वह रुका। उसके लोटे में जो थोड़ा बहुत पानी बच गया था, उसमें से थोड़ा उसने बूढ़े के मुख में डाला और बाकी स्वयं पी गया।

उस समय एक खाली घड़ा लेकर जा रहा था। उसने पूछा—"भाई, तुम कौन हो? यदि भण्डारी को मालूम हो गया कि तुमने इस आदमी के मुख में पानी डाला है, तो वह तुम्हें एक बून्द पानी नहीं देगा। यदि वह बिगड़ गया, तो इस ईलाके में तुम्हें कोई एक मिनिट नहीं रहने देगा।" पन्नालाल यह सुन बड़ा चकित हुआ। "क्यों? इस बूढ़े ने भण्डारी का या यहाँ के लोगों का क्या बिगाड़ा है?"

"यह बड़ा धोखेबाज है। इस अन्धे की मौत के लिए हम सब इन्तज़ार कर रहे हैं।" उस आदमी ने कहा।

पन्नालाल उस आदमी की ओर देखकर जान गया कि उसकी आँखें न थीं। वह बूढ़ा कुछ पानी पीकर ज़रा ठीक हो गया था। पर उसकी हालत इतनी अच्छी न थी कि बात कर पाता। ऊपर से उसने यह भी ईशारा किया कि वह थोड़ा पानी और चाहता था। पन्नालाल को न सूझा कि क्या करे। भण्डारी के पास जाकर पानी लाने तक यह ज़िन्दा रहेगा कि नहीं यह सोचकर उसने आते जाते लोगों से एक और लोटा पानी खरीदने की सोची पर वहाँ कोई मिला नहीं। इतने में पास

हाँ किसी औरत का चिल्लाना सुनाई पड़ा। पन्नालाल झट उसकी ओर दौड़ा।

थोड़ी दूर पर दो गँवार बड़ी बड़ी लाठियाँ लेकर उस स्त्री से घड़ा भर पानी छीनने के लिए उसे डरा रहे थे। पन्नालाल एक पर लपका। उसके पेट में लात मारी। उसके हाथ से लाठी लेकर जब दूसरे पर उसने मारी तो दोनों गुण्डे वहाँ से रफू चक्कर हो गये।

"इन पानी के चोरों से हम बड़े तंग हैं। तुमने हमारी रक्षा की, नहीं तो न मालूम हमारी क्या हालत होती!" उस स्त्री ने कहा।

"तुम्हें भगवान ने ही भेजा है। मै और एक आदमी प्यास के कारण मरे जा रहे हैं। मेरे लोटे में थोड़ा-सा पानी डाल दो।" पन्नालाल ने कहा। उसने बड़ी होशियारी से पन्नालाल का लोटा भर दिया। एक बून्द भी उसने नीचे न गिरने दी। पन्नालाल ने फिर थोड़ा पानी बूढ़े के मुख में डाला और कुछ स्वयं पी गया।

पन्नालाल ने ज्योंहि उस बूढ़े को पानी दिया त्योंहि वह स्त्री इधर उधर देखने लगी।

"घबराओ मत! मैं राजा से कहकर भण्डारी की खबर लूँगा। क्या तुम जानती हो, इस बूढ़े ने भण्डारी का क्या बिगाड़ा है?" पन्नालाल ने पूछा।

उसने बूढ़े की कहानी यूँ सुनाई।

बूढ़ा जलवेदी था। वह कह सकता था कि पानी कहाँ मिलेगा। वह भण्डारी के पास गया। उससे कहा कि वह बतायेगा कि कहाँ कहाँ पानी के लिए खोदा जा सकता है। उसने इस काम के लिए थोड़ा पैसा भी माँगा।" मैंने इस सारे प्रान्त की परीक्षा करवाई है। कहीं पानी नहीं मिलेगा।" भण्डारी ने कहा।

"ऐसी बात नहीं, दो तीन जगह बिना बहुत खोदे ही पानी मिल सकता है। मैं देख दाखकर बताऊँगा।" बूढ़े ने कहा।

लोगों ने भण्डारी पर दबाव डाला और कहा कि जहाँ बूढ़ा कह रहा था, वहाँ खुदवाकर देखा जाये।

"अच्छा, एक जगह दिखाओ। वहाँ खुदवाऊँगा। यदि पानी निकला, तो तुम्हें बीस रुपये दूँगा। नहीं तो तुम्हें यहाँ जिन्दा न रहने दूँगा।" भण्डारी ने पाँच दस आदमी के सामने कहा।

इसके बाद भण्डारी बूढ़े को साथ लेकर शाम को अन्धेरा होने के बाद निकल पड़ा। बूढ़े ने भण्डारी को एक निर्जन स्थल पर ले जाकर कहा—"यहाँ खुदवाइये, बीस फीट की गहराई पर पानी निकलेगा।"

अगले दिन भण्डारी आदमियों को ले गया और वहाँ खुदवाने लगा। परन्तु कुँआ वहाँ नहीं खुदवाया, जहाँ कि बूढ़े ने कहा था। किन्तु एक और जगह। बहुत खोदा, पर पानी नहीं निकला।

"देखा, इसने पैसे के लालच में हमारी व्यर्थ आशायें बँधवाई। इसे कोई भीख तक न दे, घूँट भर पानी तक न देना, जहाँ मर जाये इसे वहीं गाड़ देना।" भण्डारी ने सब से कहा। उस भण्डारी का जो पानी बेचकर पैसा बनाना चाहता था, बूढ़े पर जलना स्वाभाविक था। रौबदार आदमी था, इसलिए वह बूढ़े को प्यासा मार देना चाहता था।

"भण्डारी ने, जहाँ मैंने कुँआ खोदने के लिए कहा था, वहाँ नहीं खुदवाया है, मैंने छाती पीट पीटकर कहा। पर किसी ने मेरी बात न सुनी, मैं ही मूर्ख बना। जहाँ मैंने कहा था, वहाँ अवश्य पानी निकलेगा। आँखों के चले जाने के बाद

मुझ में एक शक्ति-सी आ गई है। मुझे भूमि में पानी की कल कल ध्वनि सुनाई पड़ती है और दूर की बात क्या....जहाँ मैं पड़ा हुआ हूँ, अगर यहीं १५ फीट खोदा गया तो पानी निकलेगा।" बूढ़े ने पन्नालाल के दिये हुए पानी को पीकर कहा। वह उठ बैठा।

पन्नालाल ने बातों बातों में जान लिया कि वह ही उसका मामा था।

"तुम ही मेरे मामा हो। मैं तुम्हें खोजता खोजता ही यहाँ आया हूँ। घूम फिरकर बुढ़ापे में तुम नाना कष्ट झेल रहे हो। यह सुनकर माँ ने तुम्हें लाने के लिए मुझे भेजा है।" पन्नालाल ने कहा।

वे यूँ बात कर रहे थे कि भण्डारी के कुँए से कुछ आदमी जोर से बातें करते, खाली घड़े लेकर उस तरफ़ आये। जब पूछताछ हुई तो मालूम हुआ कि भण्डारी के कुंये में गिरकर कोई मर गया था। एक ही कुँआ था और अब उसका पानी भी लोगों के भाग्य में न लिखा था।

दस पाँच आदमी जमा हो गये। पन्नालाल ने उनसे कहा—"कम से कम अब तो आँखें खोलो, भण्डारी ने तुम्हें यह विश्वास दिलाकर कि यह निर्जल प्रदेश है, तुम्हें धोखा दिया है। जहाँ हम बैठे हैं, वहीं पानी है। फावड़े, तसले वगैरह, ले आओ। हम पाँच दस आदमी यहाँ खोदने लगे, तो जल्दी ही भण्डारी का भण्डा फूट जायेगा।"

पन्नालाल की बातों पर उनको विश्वास हो गया। देखते देखते लोग फावड़े वगैरह लेकर आ गये और साथ बूढ़े के लिए कुछ खाने पीने के लिए भी लाये। खोदने का काम जल्दी जल्दी होने लगा। शाम होते होते पानी दिखाई देने लगा।

लोगों की खुशी का ठिकाना न था। अन्धेरा होते होते सैकड़ों आदमी जमा हो गये। कहीं से मशालें आयीं। कहीं से नारियल, कपूर वगैरह आये।

अगले दिन सवेरे तक काफ़ी गहरा कुँआ खुदकर तैयार हो गया। कुँये पर नारियल चढ़ाये गये। उसकी आरती उतारी गई। पन्नालाल ने सब को घड़े भर भरकर पानी दिया। ऐसा कोई न था, जिसके मुख पर पन्नालाल और बूढ़े का नाम न हो।

बूढ़ा उस प्रान्त के लोगों के लिए भगवान-सा हो गया। उसे सारे प्रान्त में घुमाया गया और उससे पूछा गया कि कहाँ कहाँ और कुँये खुदवाये जा सकते थे। उस निर्जल प्रान्त में, उसकी सहायता से दो तीन जगह और पानी खोदा गया। उस प्रान्त के लोगों के लिए पानी की कमी न रही। पीने के लिए तो पानी मिला ही....शाक सब्जी पैदा करने के लिए भी काफ़ी पानी बचने लगा।

पन्नालाल ने राजा के यहाँ भण्डारी के अत्याचार के बारे में एक फरियाद दी। अपने मामा को वह घर ले गया। पन्नालाल की माँ अपने भाई को बहुत दिनों बाद देखकर बहुत खुश हुई। फिर राजा ने बूढ़े को बुलवाया। उसने जो उपकार किया था उसके लिए उसका सम्मान करवाया। पन्नालाल ने सुना कि भण्डारी के ज़मीन्दाराना हक रद्द कर दिये गये थे, उस पर जुरमाना भी हुआ था। व्यापार करने का हक हर किसी को मिल गया था। पहाड़ के परे के इलाके में दाम भी कम हो गये थे और वहाँ के लोग सुख से जी रहे थे।

पागल की अक्ल

एक जंगल राज्य में नाहर नाम का लुहार रहा करता था। उस राज्य के शिकारी और किसान, अपने औजार उस लुहार से ही बनवाया करते। एक दिन सवेरे लुहार धौंकनी लेकर अपना काम शुरु करनेवाला था कि एक सैनिक ने आकर कहा कि राजा उसे बुला रहे हैं। तुरत लुहार उठा। कपड़े बदले और राजा को देखने निकल पड़ा।

लुहार आया है, यह जानते ही राजा ने उसको बुलाया। कई सारे लोहे के टुकड़े उसके सामने रखे। "तुम इन्हें ले जाओ। पिघालो और एक आदमी तैयार करो। लोहे के बने आदमी में रक्त माँस सभी कुछ होना चाहिए और उसमें सोचने की शक्ति भी होनी चाहिए। तुम्हें एक महीने का समय देता हूँ।"

लुहार की अक्ल जाती रही। राजा की आज्ञा ठुकराई नहीं जा सकती थी। यदि आज्ञा का पालन न किया गया, तो राजा सिर कटवा देंगे। लुहार को न सूझा कि क्या करे? उसने राजा को झुककर नमस्कार किया और घर की ओर चल दिया।

इसके बाद लुहार के दोस्त उसके घर आये और उसकी दुविधा के बारे में उन्होंने मालूम किया। उस दुविधा से बाहर पड़ने के लिए हर किसी ने एक एक रास्ता बताया।

परन्तु उनके सुझाव उसको जंचे नहीं। वह न सोता था, न खाता था। चिन्ता में वह पगला-सा गया। लोगों में वह रह भी न सका। जंगल में घूमता घूमता वह अपने से ही बातें करने लगा।

कमला सूद

इस तरह जब वह जंगल में फिर रहा था, तो उसको एक पागल दिखाई दिया। "अरे, तुम हो लुहार भाई! आज हमारे यहाँ खाने पर आना।"

वह पागल, लुहार का पुराना यार था। कुछ दिन पहिले ही वह पागल हो गया था। तब से वह जंगलों में घूम रहा था। किसी को न दिखाई देता था।

उस पागल को देखकर, लुहार को उस पर दया आई और उससे कुछ कुछ ईर्ष्या भी हुई। उसे कोई चिन्ता न थी। वह बड़े मज़े में था।

लुहार को वह पागल एक पेड़ के नीचे ले गया। "यही हमारा घर है और यह है भोजन।" उसने उसको जामून और शहद लाकर दिया। दोनों ने जामून खाये और शहद के छत्तों से, शहद चूसकर पिया। लुहार इतने दिनों से भूखा था कि यह भोजन ही, उसको अमृत-सा लगा। जल्दी ही उसका पेट भर गया।

न मालूम क्यों लुहार ने उस पागल से राजा के दिये हुए काम के बारे में कहा—"राजा चाहता है कि लोहे से मैं असली आदमी बनाऊँ। क्या यह सम्भव है? यदि मैंने बनाकर न दिया, तो राजा मुझे मरवा देगा।"

पागल ने कुछ देर सोचकर कहा· "हाँ, लोहे से आदमी बनाया जा सकता है। यह कौन-सी बड़ी बात है!"

"कैसे?"

पागल ने लुहार के पास सरककर कहा—"यह एक रहस्य है। दोस्त हो, इसलिए बता रहा हूँ। भट्टी में, मनुष्य के बालों से आग बनाकर, उसमें लोहा पिघालो और ज्यों ज्यों आग बढ़ती जाये, त्यों त्यों मनुष्य के आँसू डालते जाओ।

इस तरह पिघलाये गये लोहे को अगर ढ़ाला गया, तो सचमुच लोहे का आदमी तैयार होगा। इस भेद को याद रखना।"

लुहार को झट एक बात सूझी। "अच्छा भाई, जैसा तुम कहोगे, वैसा ही करूँगा। फिर कभी मिलूँगा।" वह पागल से विदा लेकर सीधे राजा के पास गया। "महाराज, लोहे से आदमी बनाने के लिए मैंने इन्तज़ाम कर दिये हैं। जो समान चाहिए मेहरबानी करके मुझे आप वह दिलवाइये।"

"क्या है वह समान?" राजा ने पूछा।

"लोहा पिघालने लिए कोयला काम नहीं आयेगा। आदमी के बाल चाहिए। कम से कम हज़ार गाड़ी भरा और आग जब ज्यादह हो जाये, तो उसे ठंडा करने के लिए, मनुष्य के आँसू चाहिए। वे भी एक हज़ार घड़े मँगवाइये। जब तक ये नहीं मिलते, तब तक वह काम शुरु करना असम्भव है।" लुहार ने कहा।

राजा मान गया। उसने अपने सैनिक भेजे। उन्होंने वापिस आकर कहा—"हुज़ूर, लुहार जो समान माँग रहा है, वह नहीं मिल सकते। एक गाड़ी-भर बाल तो मिल सकते हैं और एक घड़ा आँसू भी मिल सकते हैं, पर उससे ज्यादह नहीं मिल सकते।"

राजा ने निरुत्साहित होकर कहा—"लोहे से आदमी बनाने के लिए, जो समान ज़रूरी है, वह मिलता नहीं लगता। खैर, उस काम को छोड़ दो।"

लुहार की जान में जान आई। वह जंगल से उस पागल को ले आया। उसे अपने घर में रखकर, कपड़ा, खाना देकर, उसका पोषण करने लगा।

महाबलशाली

एक जंगल के पास एक बड़ा बलवान आदमी रहा करता था। उसका नाम शरभ था। शरभ सोचा करता था कि उससे अधिक बलवान कोई न था। चूँकि वह जंगल जाता, लकड़ियाँ काटता और मामूली गट्ठरों से दस गुना बड़ा गट्ठर घर लाता। उसने अपनी पत्नी से कहा—"देख मैं कितना बड़ा गट्ठर लाया हूँ। मैं कलयुग भीम हूँ।"

"भीम हो? यदि असली भीम सामने आ जाये तो तुम भागोगे नहीं? बलवान हो, कौन नहीं कहता है। पर महाबलवान नहीं हो।" शरभ की पत्नी दुर्गा ने साफ़ साफ़ कहा।

यह सुनते ही शरभ को गुस्सा आ गया। "बातों से क्या फायदा? मुझ से अधिक बलवान दिखाओ, तब मैं विश्वास करूँगा।" उसने कहा।

एक दिन दुर्गा सिर पर एक बड़ा घड़ा रखकर पानी लाने कुँए पर गई। जब उसने कुँए में से पानी का डब्बा ऊपर खींचना चाहा तो वह इतना भारी हो गया कि ऊपर न आया। वह खींचते खींचते पसीने से तर हो गई। पर कोई फायदा नहीं हुआ। आखिर तंग आकर उसने डब्बा पानी में छोड़ दिया। खाली घड़ा लेकर घर की ओर चली।

वह पगडंडी पर जा रही थी कि जंगल से आती हुई एक और पगडंडी पर एक और स्त्री दिखाई दी, उसने बगल में एक बच्चा उठाया हुआ था और हाथ में खाली

घड़ा भी पकड़ रखा था। वह कुँए की ओर जा रही थी।

"क्यों खाली घड़ा लिये आ रही हो, क्या कुँआ सूख गया है?" दूसरी स्त्री ने दुर्गा से पूछा।

"नहीं, तो। पर कुँए में जो डब्बा डाला था उसे खींचने के लिए दस से अधिक आदमी चाहिए। लगता है किसी भूत ने उसे पकड़ लिया है।" दुर्गा ने कहा।

"तो मेरे साथ आओ। जितना पानी तुम्हें चाहिए, उतना मैं खींचकर दे दूँगी।" दूसरी स्त्री ने कहा। वह कोई अधिक बलशाली भी न थी। फिर भी दुर्गा उस स्त्री के साथ कुँए पर गई।

"यह देखो, मैं डब्बा कुँए में छोड़ गई थी। क्या तुम इसे खींच सकोगी?" दुर्गा ने रस्सी दिखाई।

इतने में स्त्री की गोद के लड़के ने रस्सी अपने हाथ में ली और झट डब्बा ऊपर खींच दिया। दुर्गा को दान्त तले अंगुली रखनी पड़ी। वह इतनी चकित थी कि उसके मुख से बात तक न निकली। पर बच्चे की माँ को बिल्कुल अचरज न हुआ।

वह गोदी का लड़का, एक के बाद एक पानी से भरा डब्बा कुँये में से खींचता गया। दोनों स्त्रियों ने उस पानी से कपड़े धोये। स्वयं स्नान किया। घड़ों में उसने पानी भी भर लिया।

वापिस जाते जाते, उसका रास्ता अलग होने से पहिले दुर्गा ने दूसरी स्त्री से सब कुछ जान लिया।

दुर्गा ने घर आते ही, जो कुछ गुजरा था, अपने पति को बता दिया।

"इस प्रान्त में अपने को द्वितीय भीम बताता एक और घूम रहा है। देखो, उसकी खबर लूँगा।" शरभ ने कहा।

"तुम्हारा भला होगा। उसके पास तुम न फटकना। अगर तुमको उसने मार दिया, तो मेरी क्या हालत होगी? जब उसके गोदी के लड़के में ही इतना बल है, तो न मालूम उसमें कितना बल हो!" दुर्गा ने कहा।

शरभ ने, पत्नी की बात न सुनी। "कल सवेरे मुझे उसके घर का रास्ता दिखाओ। बाकी मैं देख लूँगा।"

अगले दिन वह अपनी पत्नी को साथ लेकर, धनुष, बाण और तलवार लेकर, निकल पड़ा। परन्तु इससे पहिले कि द्वितीय भीम को देखा जाये, वह कुँये के पास गया। ठीक उसी समय द्वितीय भीम की पत्नी भी वहाँ आयी हुई थी।

शरभ ने डब्बा लिया। कुँये में डाला। "इस छोटे से डिब्बे को ऊपर खींचने के लिए दस आदमी चाहिए?" उसने डब्बा ऊपर खींचना चाहा। हाँफते हाँफते, हाय हूय करते, उसने थोड़ा ऊपर खींचा। परन्तु तुरत डब्बा, शरभ को कुँये में खींचने लगा। अगर समय पर लड़का, उसको न पकड़ लेता, तो शरभ कुँये में जा गिरता।

इसके बाद गोंदी के लड़के ने शरभ के हाथ से रस्सी ली और आसानी से डब्बा ऊपर खींच दिया।

"अब मालूम हो गया है न सब? अब घर चलो।" दुर्गा ने अपने पति से कहा।

"इसमें कोई जादू मालूम होता है। मैं द्वितीय भीम से मिलकर रहूँगा।" शरभ ने कहा।

"जो तुम्हारे मुकद्दर में लिखा है— क्या मैं उसे बचा सकती हूँ। पर मैं तुम्हारे साथ नहीं आऊँगी।" कहती दुर्गा पानी लेकर, घर की ओर चली आई और घर में पति के बारे में चिन्तित होने लगी।

दूसरी स्त्री ने शरभ से कहा—"मेरी बात मानो। तुम भी घर जाओ। मेरे पति की नज़र में पड़ना उतना अच्छा नहीं है।" परन्तु शरभ अपनी जिद पर रहा। उसके पीछे पीछे वह चलता गया।

"मेरा पति शिकार के लिए गया हुआ है। वह एक भोजन में एक एक हाथी निगल जाता है। इसलिए तुम कहीं छुप जाओ और छुपे छुपे रहो। सामने दिखाई दिये, तो तुम्हें चीर फाड़ देगा।" द्वितीय भीम की पत्नी ने कहा।

उसने शरभ को उठाकर एक घड़े में रखा। अंगूठे पर खड़े हुए बिना, जो कुछ बाहर हो रहा था, वह उसे देख भी न सकता था।

शाम होते होते एक तूफ़ान-सा आया। द्वितीय भीम ने अपने आँगन में आकर कहा—"हाथी पकाया कि नहीं?" उसकी आवाज़ से, सब चीज़ें काँप उठीं। शरभ भी काँपने लगा। वह अब जान गया कि उससे भी अधिक कोई बलवान था।

"तेरा हाथी तैयार है। आकर खाओ।" द्वितीय भीम की पत्नी ने कहा।

"जरा ठहरो! कहीं से मनुष्य की बू आ रही है। मनुष्य को खाये बहुत दिन हो गये हैं। यह कहकर द्वितीय भीम अपने घर के आस पास का जंगल छानने लगा।

पति के दूर जाते ही, उसकी पत्नी ने शरभ के पास आकर कहा—"मेरा पति खाकर सो जायेगा। तब मैं दीया खिड़की में रख दूँगी, तब समझना कि तुम्हारे भागने का मौका आ गया है। फिर इस घर के आस पास कभी न फटकना।"

"कभी नहीं आऊँगा। कभी नहीं आऊँगा। मुझे अक्ल आ गई है।" शरभ ने कहा।

रात के समय शरभ को खिड़की में दीया दिखाई दिया। वह धीमे से घड़े में से निकला और तेज़ी से चलने लगा।

वह थोड़ी दूर गया था कि बड़ा तूफ़ान-सा आया। उसे कुछ दूरी पर "मनुष्य की बू मनुष्य की बू" की आवाज़ सुनाई दी। द्वितीय भीम की आवाज शरभ ने पहिचान ली और सिर पर पैर रखकर भागने लगा।

शरभ बहुत दूर भागा, पर द्वितीय भीम उसका पीछा करता जाता था। तूफ़ान चलता जा रहा था। शरभ के पैरों में शक्ति नहीं रह गई थी। पर हवा के ज़ोर से वह भागता जा रहा था। वह चूँकि जंगल में भागा जा रहा था, इसलिए उसे बहुत दूर जाने पर भी कहीं कोई बस्ती न दिखाई दी।

इतने में शरभ को एक ऐसा दृश्य दिखाई दिया कि ऊपर के प्राण ऊपर रह गये और नीचे के नीचे। जंगल के बीच में एक महाकाय जंगली जानवरों के ढेर के

सामने बैठा था। वह उनको चीर फाड़कर खा रहा था और हड्डियाँ एक तरफ़ फेंकता जाता था।

"कौन हो तुम? कौन तुम्हें खदेड़ रहा है?" उस महाकाय ने शरभ से पूछा।

"एक महाबलि" शरभ ने कहा।

महाकाय ने कोप में हुँकारते हुए कहा—"जब जंगली राक्षस मैं यहाँ हूँ, तो दूसरा बलवान कौन हो सकता है? आओ मैं उसके प्राण ले लूँगा।" वह गरजा।

इतने में द्वितीय भीम आया। उसके साथ आये हुए तूफ़ान ने शरभ को उड़ा-सा दिया। वह एक पेड़ की टहनी में जा फँसा। वहाँ से उसने उन बलवानों का भयंकर युद्ध अपनी आँखों देखा।

दोनों बलशाली कुछ देर तक एक दूसरे को देखते खड़े रहे। फिर भिड़ पड़े। उन्होंने इस तरह एक दूसरे पर मुक्के बरसाये कि पहाड़ भी चूरे चूरे हो सकते थे।

सवेरे तक दोनों जोर से लड़ते रहे। तब वे आकाश में बादलों के पीछे इस तरह छुप गये, जैसे आपस में कह सुनकर कुछ तय कर लिया हो। तब भी उनकी ललकारें, गर्जन शरभ को सुनाई पड़ रहे थे।

शरभ बहुत देर तक देखता रहा कि उनमें कौन जीतता है। पर वे फिर भूमि पर न आये। आखिर वह पेड़ पर से उतरकर रास्ता खोजता घर की ओर निकल पड़ा।

इसके बाद शरभ ने कभी अपने बल के बारे में शेखी न मारी। उस प्रान्त में जब कभी बादल गरजते हैं, तो लोग कहते हैं, "महा बलवान अब भी लड़ रहे हैं।"
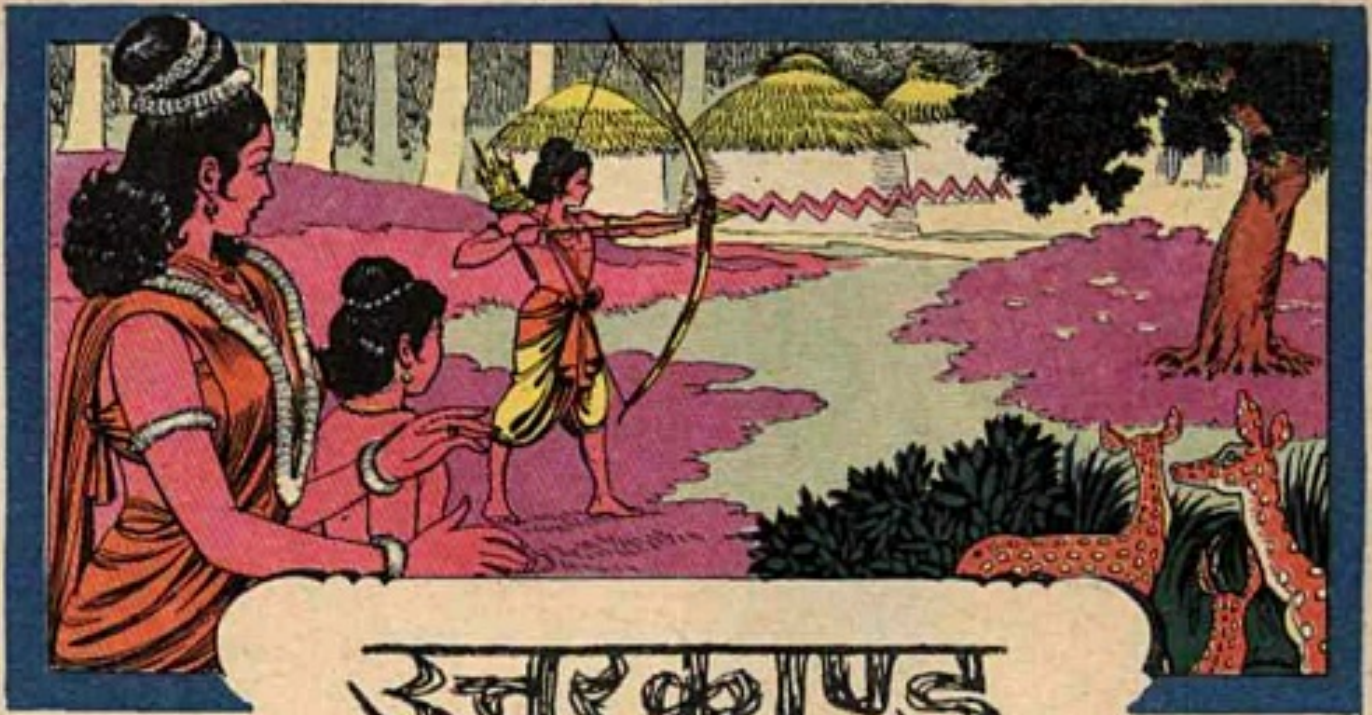
उत्तरकाण्ड

लक्ष्मण कुछ भी न कह सका। रोते रोते उसने सीता को साष्टान्ग किया। उनके चारों ओर प्रदक्षिणा की। वह नाव पर सवार होकर, उत्तर तट पर पहुँच गया।

रथ पर सवार होकर, रह रहकर, तट के उसके पार, अनाथ की तरह रोती सीता को उसने देखा। सीता भी उस रथ की ओर देखती रही। वह अपने दुःख को काबू में न रख सकीं। फूट फूट रोने लगीं। उनके रोने से सारा निर्जन वन गूँज उठा।

उस निर्जन वन में अकेली रोती सीता को मुनि कुमारियों ने देखा। वाल्मीकी के पास वे भागे भागे गये। "स्वामी! गंगा के तट पर एक स्त्री न मालूम क्यों रो रही हैं और वे ऐसी मालूम होती हैं, जैसे आकाश से उतरी हुई कोई अप्सरा हों। लगता है, उनका कोई नहीं है। उनको आश्रय मिलना चाहिए। आप तुरत जाकर उनको देखिये।"

वाल्मीकी महामुनि अपने शिष्यों के साथ, सीता के पास गये। उन्हें पहिचान कर, उन्होंने कहा—"दशरथ की वधू का स्वागत! तुम यहाँ कैसे पहुँचे यह मैंने अपनी शक्ति द्वारा जान लिया है। तीनों लोकों का वृत्तान्त मुझे मालूम होता रहता है। जब तक मैं हूँ, तब तक तुम्हें कोई

भय नहीं है। मेरा आश्रम पास ही है। वहाँ तपस्विनियाँ हैं। वे तुम्हारी देखभाल करेंगी। चिन्ता मत करो। यह अर्घ्य लो। तुम आश्रम में वैसे ही रह सकते हो, जैसे अपने घर में रहती थी।"

सीता ने उनको नमस्कार किया। वाल्मीकी के साथ आश्रम में गई। वाल्मीकी ने उनको मुनि पत्नियों को सौंप दिया और कहा कि वे उसकी अच्छी तरह देखभाल करें।

अयोध्या वापिस आते हुए लक्ष्मण ने सुमन्त्र ने कहा—"सुमन्त्र! भाई को सीता के वियोग के कारण कितना दुःख हुआ था, यह तो देखा ही था, अब देखो निर्दोष सीता पर कितने कष्ट हुए हैं।"

सुमन्त्र ने यह सुनकर कहा—"लक्ष्मण, राम को सुख कम है। मुनि पहिले ही कह चुके हैं कि उसको स्वकीयों का वियोग सहना होगा। यह बड़ा भारी भेद है। मैं तुम्हें बताता हूँ। पर तुम भरत शत्रुघ्न से न कहना।" उसने यूँ सुनाना शुरु किया।

एक बार जब दशरथ, वशिष्ठ के आश्रम में गया, तो वहाँ अत्रि महामुनि का पुत्र दुर्वासा था। मुनियों का स्वागत प्राप्त करके, दशरथ ने बातों बातों में दुर्वासा से पूछा—"महात्मा! मेरी सन्तान का भविष्य कैसे होगा? राम की उम्र कितनी है? मेरे बाकी लड़के कितने साल जीयेंगे? हमारे राम के कितने लड़के होंगे? वे कितने साल जीवित रहेंगे?" इन प्रश्नों के उत्तर में दुर्वासा ने एक पुरानी कहानी सुनाई।

"देवताओं और राक्षसों के युद्ध में राक्षस हारकर भृगु महामुनि की पत्नी के आश्रम में आये। उसने उनको अभय

दिया। यह देख विष्णु क्रुद्ध हुए। उन्होंने भृग की पत्नी का सिर चक्र से काट दिया। तुरत भृग महामुनि क्रुद्ध हुए और उन्होंने विष्णु को शाप दिया कि वह भूमि पर पैदा हो और पत्नी वियोग का कष्ट सहे। इस शाप के कारण विष्णु, दशरथ के लड़के के रूप में पैदा हुए और राम नाम से प्रसिद्ध हुए। राम, भृग के शाप का फल भुगत कर रहेगा। वह ग्यारह हज़ार वर्ष अयोध्या का परिपालन करके, अनेक अश्वमेध यज्ञ करके, ब्रह्मलोक पहुँचेगा। उसके दो लड़के होंगे। पर वे अयोध्या में न पैदा होकर और कहीं पैदा होंगे। उनका राम पट्टाभिषेक करेगा।" दुर्वासा ने दशरथ को बताया।

ये बातें करते करते लक्ष्मण और सुमन्त्र शाम के समय गोमति पहुँचे, रात उन्होंने वहीं काटी। अगले दिन जब वे अयोध्या की ओर जा रहे थे, तो लक्ष्मण सोचने लगा कि राम को कैसे और क्या कहा जाये।

रथ अयोध्या पहुँचा। राम के घर के सामने लक्ष्मण रथ से उतरा। अन्दर जाकर आँसू बहाते हुए सिंहासन पर बैठे, राम को नमस्कार करके, कहा—"आपकी
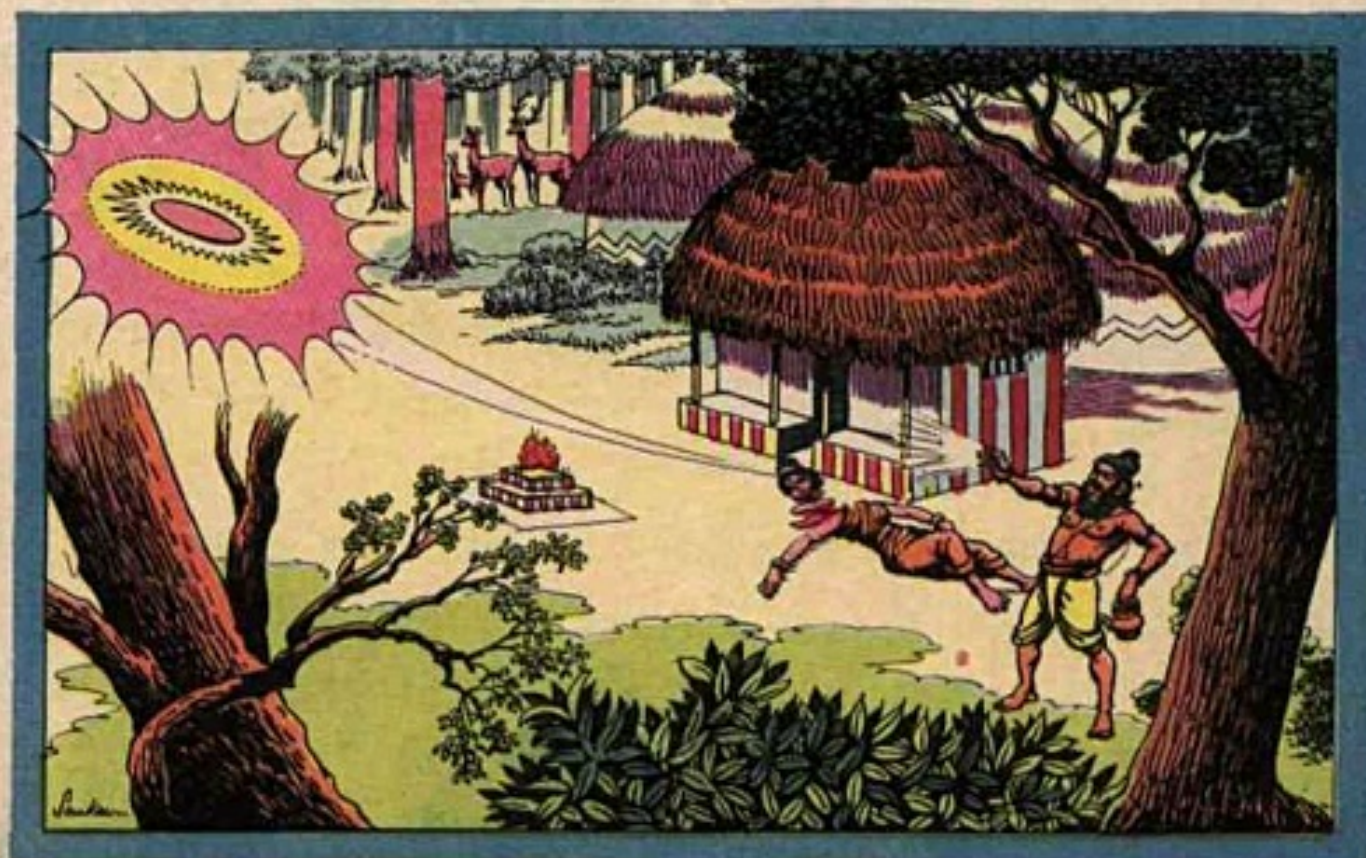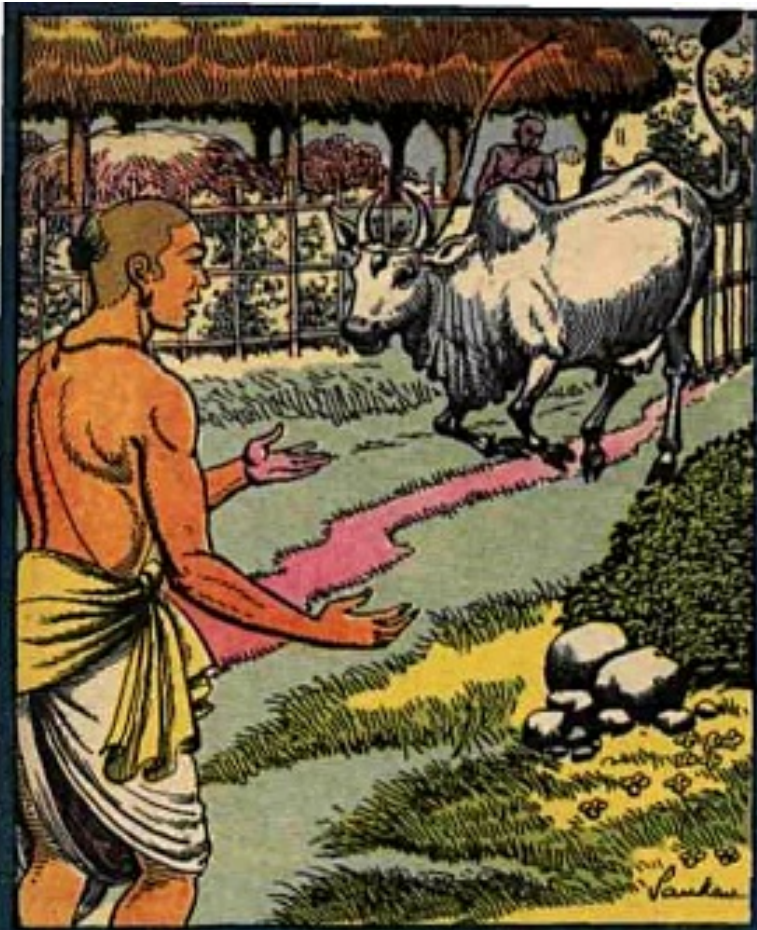
आज्ञा के अनुसार, सीता को गंगा तट पर, वाल्मीकी महामुनि के आश्रम में छोड़ आया हूँ। शोक मत करो। वृद्धि से क्षय, उन्नति से पतन, संभोग से वियोग, अवश्यम्भावी हैं। जो बदनामी आयी है, वह स्वयं चली जायेगी।"

"लक्ष्मण, तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया। बहुत सन्तोष है। मुझे कोई दुःख नहीं है।" राम ने कहा।

तब तक चार दिन पहिले से, उन्होंने प्रजा की बात न सुनी थी। यह बड़ी गलती थी। राम ने लक्ष्मण से यह बात कहकर, उसके दृष्टान्त के रूप में नृग महाराज की कहानी सुनाई।

पहिले नृग महाराजा ने करोड़ों गौव्वें ब्राह्मणों को दान में दीं। दान में दी हुई गौव्वों में से एक गौ गलती से, राजा के गौव्वों में मिल गई, राजा को यह न मालूम हुआ। उसने वह गौ, एक और ब्राह्मण को दान में दे दी। उस ब्राह्मण ने खोजते खोजते उस गाय को, एक और ब्राह्मण के घर कनखल में देखी। उसने, उनको अपने दिये हुए नाम से पुकारा। गौ भी अपने पुराने मालिक की आवाज़ पहिचान गई। रस्सी तोड़कर रम्भाती, उसके पीछे चल दी। यह देख दूसरे ब्राह्मण ने कहा—"मेरी गौ को तुम क्यों ले जा रहे हो? इसे नृग महाराजा ने मुझे दान दिया है।"

"नृग महाराजा ने ही मुझे भी दान दिया है।" पहिले ब्राह्मण ने कहा। वे क्योंकि स्वयं आपस में बीच बटाव नहीं कर सकते थे इसलिए वे सीधे नृग महाराजा के पास गये। परन्तु वे राजा के दर्शन न कर सके। बाहर द्वार पर उनको कई दिन प्रतीक्षा करनी पड़ी। आखिर उन्होंने क्रोध में शाप दिया कि राजा गिरगिट हो

जाये, बिना किसी की नज़र में पड़े गढ़े में जीये। जब राजा ने उनको मनाने की कोशिश की, तो उन्होंने कहा कि चक्र वंश में वासुदेव पैदा होगा और वह उनको शाप विमुक्त कर सकेगा।

इसके बाद, नृग महाराजा ने अपने वसु नाम के लड़के का पट्टाभिषेक वैभव के साथ किया। गिरगिट का जीवन सुख से बिताने के लिए कुछ गढ़े खुदवाये। उन पर उसने वृक्षों की छाया आने दी। आसपास फूलों के पौधों की भी व्यवस्था की।

राम ने लक्ष्मण को, नृग महाराजा की कहानी सुनाकर निमि की भी कहानी सुनाई।

निमि ईक्ष्वाकू महाराजा के पुत्रों में बारहवाँ था। उसने एक दिव्य नगर बनाया और उनका नाम वैजयन्त रखा। उसने अपने पिता को खुश करने के लिए एक यज्ञ करने की सोची और वशिष्ठ से उसने पौरोहित्य करने के लिए कहा। परन्तु वशिष्ठ यह कहकर चले गये कि इन्द्र ने पहिले ही उनसे एक यज्ञ करवाने के लिए कहा था। उस यज्ञ के बाद ही वे उसका यज्ञ करवा सकेंगे। इसलिए
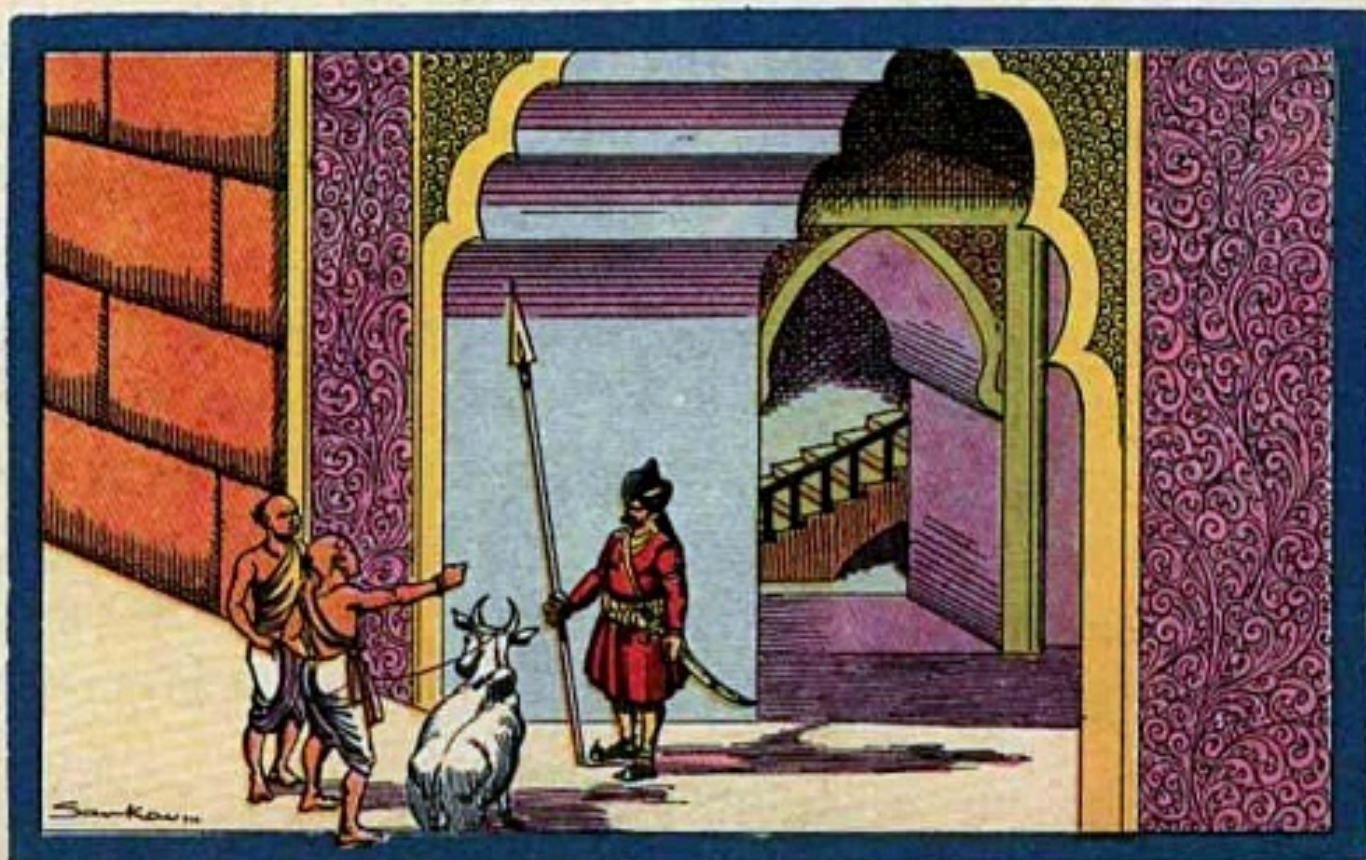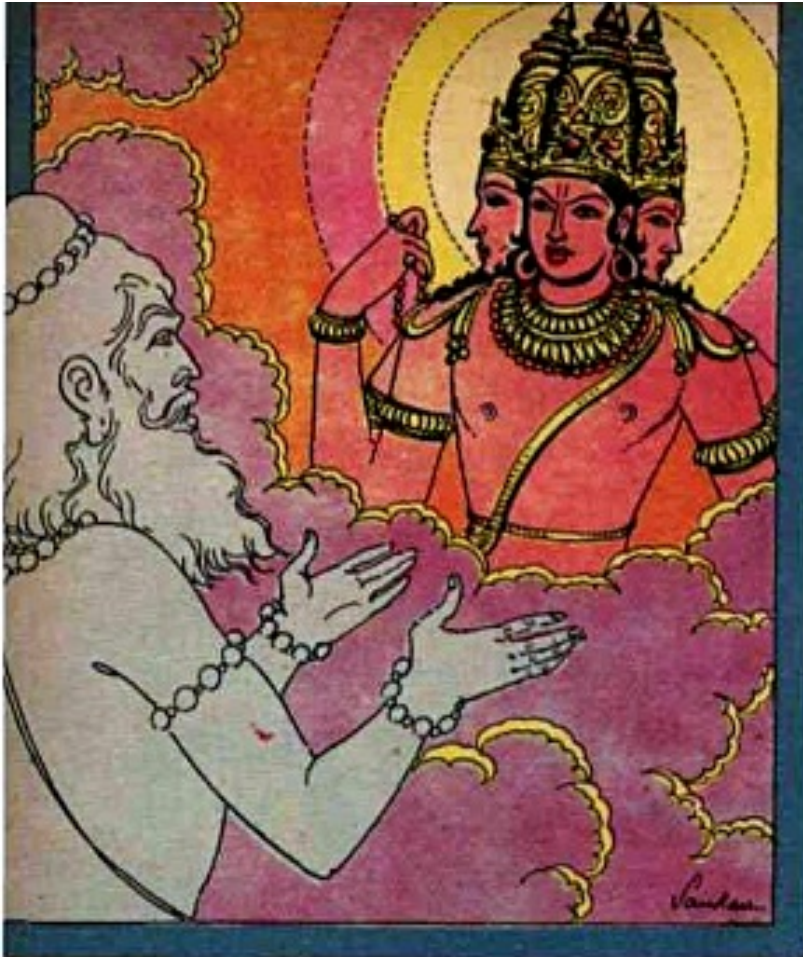
निमि ने गौतम से यज्ञ करवाया। इन्द्र का यज्ञ पूरा करके, जब वशिष्ठ वापिस आये, तो उनको यह जानकर, क्रोध आया कि उनकी अनुपस्थिति में निमि ने वह यज्ञ करवा दिया था। वे राजा को देखने गये। उस समय राजा सो रहा था। वशिष्ठ ने राजा के दर्शन के लिए कुछ देर प्रतीक्षा की। फिर यह सोचकर कि राजा जान बूझकर उससे प्रतीक्षा करवा रहा था, उन्होंने शाप दिया—"राजा, क्योंकि तुमने एक और से यज्ञ करवाकर, मेरा अपमान किया है, इसलिए तुम्हारा शरीर निश्चेतन हो जाये।"

फिर राजा उठा। उसे वशिष्ठ के शाप के बारे में मालूम हुआ। "जब मैं सो रहा था, तब तुमने यह शाप दिया है, इसलिए तुम्हारा शरीर भी निश्चेतन हो जाये।" उसने भी वशिष्ठ को शाप दिया।

इस प्रकार एक दूसरे को शाप देकर निमि और वशिष्ठ "विदेह" हो गये। तब वशिष्ठ वायु रुप में अपने पिता ब्रह्मा के पास गये। "पिताजी, निमि के शाप से मेरा शरीर चला गया है। देह के न होने के कारण बड़े कष्ट हो रहे हैं। कोई भी काम नहीं किया जा सकता। इसलिए कृपा करके मुझे एक और शरीर दिलवाओ।" उसने कहा।

ब्रह्मा ने वशिष्ठ से, मित्र और वरुण के तेज से फिर शरीर प्राप्त करने के लिए कहा। इस प्रकार, दुबारा शरीर प्राप्त किये हुए वशिष्ठ ईक्ष्वाकु वंश का पुरोहित बने।

और निमि की बात यह है। निमि के शरीर की मुनियों ने रक्षा की। यद्यपि निमि का सारा देह चला गया था। पर उसके सारे प्राण उसके आँखों में थे। फिर उन्होंने निमि के देह को मथा, तो एक लड़का पैदा हुआ, जो मिथि कहलाया।

उसके नाम से ही मिथिला नगर बना। उसका नाम जनक भी है।

राम की सुनाई हुई कहानियाँ सुनकर लक्ष्मण ने कहा—"भाई, क्षत्रिय होकर भी, निमि ने वशिष्ठ जैसे महात्मा के प्रति क्यों नहीं शान्ति दिखाई?"

"रोष में, हर किसी के लिए शान्ति खो बैठना आसान है। इस तरह के रोष का नियन्त्रण करनेवाला, केवल यायाति ही है।" कहकर, राम ने लक्ष्मण को यायाति की बात यूँ सुनाई।

यायाति नहुष का लड़का था। उसकी दो पत्नियाँ थीं। एक थी वृषपर्व महाराजा की राजकुमारी शर्मिष्ठा और दूसरी शुक्राचार्य की लड़की देवयानी। जो प्रेम यायाति को शर्मिष्ठा पर था, देवयानि पर न था। जितना प्रेम शर्मिष्ठा के लड़के पूर पर था, उतना देवयानि के लड़के यदु पर न था।

सच कहा जाय पूर बड़ा गुणवान था और ऊपर से शर्मिष्ठा का लड़का भी था। यदु को यह गँवारा न था कि उसका पिता पूर को अधिक प्रेम करे, उसने अपनी माँ देवयानी से कहा—"माँ, तुम इतने बड़े शुक्राचार्य की लड़की हो और मैं तुम्हारा लड़का हूँ और हम दोनों ही इतना अपमान क्यों सह रहे हैं? हम दोनों अग्नि में प्राण त्याग दें। भले ही तुम यह अपमान सह लो, पर मैं नहीं सह सकता। मैं आत्म हत्या कर लूँगा। तुम आज्ञा दो।" वह ज़ोर से रोने लगा।
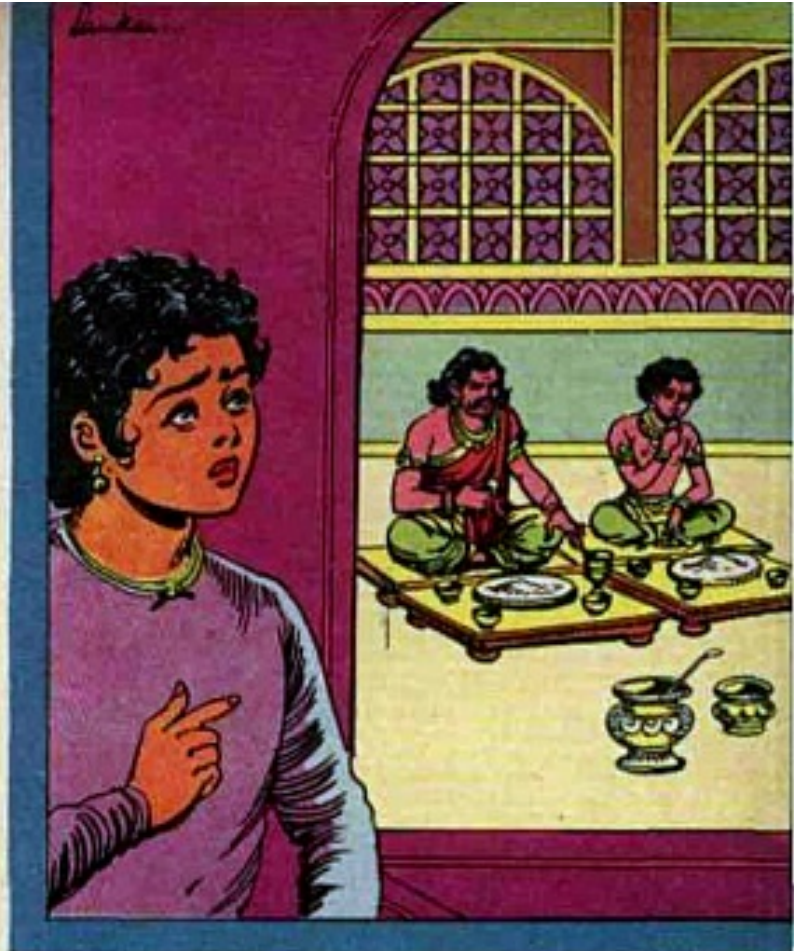
लड़के का दुःख देखकर देवयानि को गुस्सा आ गया। उसने अपने पिता को याद किया। तुरत शुक्राचार्य वहाँ आये।

"मेरा पति मुझको बड़ी नीची नज़र से देख रहा है। वह अपमान सहना मेरे लिए बड़ा कठिन हो रहा है। मैं अग्नि में

कूदकर, नहीं तो विष खाकर, नहीं तो नदी में कूदकर, आत्महत्या कर लेना चाहती हूँ।" देवयानि ने अपने पिता से कहा।

शुक्राचार्य को बड़ा गुस्सा आया। उसने शाप दिया कि यायाति वृद्ध हो जाये। पुत्री को आश्वासन दिया। फिर घर वापिस चला गया। शुक्राचार्य के शाप को यायाति ने जैसे तैसे स्वीकार किया।

उसने यदु को बुलाकर कहा—"बेटा, मैं अभी भोगों से नहीं ऊबा हूँ? इसलिए मेरे वार्धक्य को, तुम कुछ दिन ले सकोगे? जब मैं भोगों से तृप्त हो जाऊँगा, तब मैं तुम्हारा यौवन तुम्हें वापिस कर दूँगा और अपना वार्धक्य ले लूँगा।"

"जब तुम्हारे साथ भोजन करने योग्य पूर है, मैं क्यों तुम्हारा वार्धक्य लूँ? उसे ही लेने के लिए कहिये!" यदु ने कहा।

तब यायाति ने पूर को बुलाकर, उससे भी वही कहा, जो यदु से कहा था। पूर, अपने पिता का वार्धक्य स्वीकार करने के लिए मान गया। यायाति ने अपना वार्धक्य पूर को देकर, उसका यौवन स्वयं लेकर, हज़ारों यज्ञ किये और हज़ारों वर्ष राज्य किया। अन्त में उसने अपने पुत्र से वार्धक्य ले लिया। उसका राज्याभिषेक किया और देवयानि के लड़के यदु को राज्य के लिए अयोग्य घोषित कर दिया।

यायाति के बाद, पूर ने प्रतिष्ठान को राजधानी बनाकर राज्य किया।

राम लक्ष्मण ने यूँ कहानी सुनते सुनाते रात बितायी। पूर्व में उषा की लाली दिखाई देने लगी।

विधि निर्णय

सौवीर देश पर कभी राजा धात शासन किया करता था। उसकी पत्नी का नाम धात्री था। उनकी इकलौती लड़की सुशीला बड़ी सुन्दर थी। जब वह पढ़ लिखकर सयानी हो गई, तो माँ-बाप उसके विवाह के लिए सोचने विचारने लगे। पर दोनों की इस बारे में एक राय न थी। राजा चाहता था कि उसकी लड़की की शादी अपने भान्जे से करे और रानी चाहती थी वह उसके भाई के लड़के से विवाह करे।

लड़की के बारे में माँ बाप ने तू तू मैं मैं नहीं हुई। पर अपनी सम्मति के अनुसार ही उन्होंने सुशीला का विवाह करना चाहा और दोनों एक दूसरे से बिना कहे, इस दिशा में प्रयत्न भी करने लगे।

राजा ने अपने भान्जे को बुलाया। एक जगह रखा और यकायक सुशीला के विवाह का मुहूर्त निश्चित कर दिया। रानी पहिले ही जानती थी कि राजा यह चाल चल रहा था, इसलिए उसने भी अपने भाई के लड़के को बुलवाया और अन्तःपुर के एक कमरे में उसे छुपाकर रख दिया।

उसी समय ब्रह्मा-विष्णु-महेश आकाश मार्ग से सौवीर राजधानी के ऊपर जा रहे थे। वे तीनों ही सर्वज्ञ थे। सौवीर राजा और उसकी रानी को यूँ नाटक खेलता देख, उनको आश्चर्य हुआ। विष्णु, शिव ने ब्रह्मा से पूछा—"इन दोनों वरों में से सुशीला किसकी पत्नी बनेगी? क्योंकि स्त्री-पुरुषों का विवाह का काम ब्रह्मा के विभाग में आता है।"

अन्तिम पृष्ठ

"मेरे निर्णय को कोई नहीं बदल सकता।" ब्रह्मा ने कहा।

शिव ने ब्रह्मा के निर्णय को झूटा साबित करने की सोची। उसने विष्णु के साथ एक छोटा-सा षड़यन्त्र रचा।

"तुम गरुत्मन्त की सहायता से, इस लंगड़े भिखारी को, सात समुद्र पार भेजो। देखें, ब्रह्मा का निर्णय कैसे सच निकलता है।" शिव ने कहा। विष्णु इसके लिए मान गया और उसने गरुत्मन्त को याद किया। लंगड़े भिखारी को उससे, सात समुद्र पार उतारने के लिए कहा। गरुत्मन्त ने वैसा ही किया।

"इन दोनों में से सुशीला किसी की भी पत्नी न होगी।" ब्रह्मा ने कहा।

ब्रह्मा ने हँसते हुए अंगुली उठाकर दिखाते हुए कहा—"वह जो गली में भीख माँग रहा है, वह ही सुशीला का पति होगा।"

विष्णु और शिव को और आश्चर्य हुआ। शिव ने विष्णु की ओर देखकर पूछा—"यह कैसे सम्भव होगा? क्या वह बदला नहीं जा सकता?"

"हो भी सकता है। ब्रह्मा असम्भव से असम्भव कार्य भी कर सकते हैं!" विष्णु ने कहा।

इधर सौवीर नगर में सुशीला के विवाह का मुहूर्त पास आ रहा था। रानी ने अपनी लड़की को गायब करने की सोची। पाकशाला में, पंक्ति में....कई बड़े बड़े पात्र रखे हुए थे। उसमें से एक में, सुशीला को बिठा दिया गया। उसके हाथ में वर माला देकर, उसने कहा—"बेटी, इस पात्र का ढकन जो कोई उठाये, उसके गले में यह माला डाल देना।"

सुशीला ने कभी अपनी माँ की बात न ठुकराई थी। इसलिए जैसा माँ ने कहा

था, वैसा करने का उसने निश्चय किया। रानी ने उस पात्र को मुहूर्त के समय, अपने भाई के लड़के के पास भेजने का निश्चय किया।

इस बीच सप्त समुद्र के पार पहुँचकर लंगड़ा, उस निर्जन प्रदेश में भूख के कारण कराहने लगा। वह विचारा कुछ भी न जानता था। भीख से राम नाम जपता जीवन निर्वाह कर रहा था। इसलिए उसने कहा—"भगवान! क्यों मुझे भूख के कारण सताते हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?" उसकी पुकार सुनकर, विष्णु ने यह याद करके कि उसके कारण, उसकी यह हालत हुई थी, गुरुत्मन्त को बुलवाया। "सात समुद्र पार जिस भिखारी को तुम छोड़ आये थे, वह भूख के कारण कराह रहा है। उसके पास एक बड़े पात्र में भोजन भी रख आओ।"

गरुत्मन्त भोजन के लिए इधर उधर खोज रहा था कि सौवीर राजा के पाकशाला में भोजन के पात्र पंक्ति में दिखाई दिये। वह तेज़ी से आया और अन्त का पात्र उठाकर, सात समुद्र पार भिखारी के सामने उस पात्र को ला रखा और अपने रास्ते

वह चला गया। उस पात्र में ही सुशीला थी। यह विधि थी।

भिखारी तो इस आस में था कि भगवान कृपा करके, उसके लिए भोजन भेजेगा। उसने जब पात्र का ढक्कन खोला उसमें से सुशीला निकली और माता की आज्ञा के अनुसार अपने हाथ की वरमाला को, उसने लंगड़े भिखारी के गले में डाल दी। तुरत वे दोनों एक दूसरे को देखकर चकित हो गये। भिखारी यह जानकर बड़ा प्रसन्न हुआ कि उतनी बड़ी राजकुमारी ने उसको अपना वर चुना था। सुशीला ने भी यह सोचकर कि उसके भाग्य में वह ही पति था, उसको पात्र में रखी मिठाइयाँ दीं और उसकी भूख मिटाई।

मुहूर्त के समय, रानी ने वह पात्र खोजा, जिसमें उसकी लड़की छुपी हुई थी। पर वह कहीं न दिखाई दी। उसने सोचा कि शायद उसका पति उसकी चाल जान गया था। जब राजा भी अपनी लड़की को खोजने लगा, तो बड़ा हो हल्ला मचा। यह देख, दोनों "वर" धीमे से खिसक गये।

ब्रह्मा का निर्णय, यूँ कार्यान्वित देखकर, शिव को और भी आश्चर्य हुआ। "मैंने पहिले ही तुम्हें नहीं बताया था?" विष्णु ने कहा।

फिर तीनों नूतन वर वधू के पास गये। उन्हें आशीर्वाद दिया। लंगड़े की टाँग ठीक की और उन दोनों को सौवीर देश पहुँचा दिया। त्रिमूर्तियों के दिये हुए दामाद को देखकर राजा रानी बड़े खुश हुए। सुशीला, अपने पति के साथ बहुत दिन सुख से रही।

५३. कप्पड़ोसिया गोपुर

कप्पडोसिया में (तुर्की) इस कारण के नैसर्गिक गोपुर, बड़े छोटे मिलाकर ५०,००० हैं। ये पाँच "मंजिले" गोपुर हैं। १५,००० वर्ष पूर्व ईसाई मुनि इन में आये और अपनी अपनी जरूरतों के मुताबिक उन्होंने गुफ़ायें बनाईं। वे संसार से दूर रहा करते थे। अब उन 'घरों' में जंगली पक्षी रहते हैं।

Photo by Anant Desai
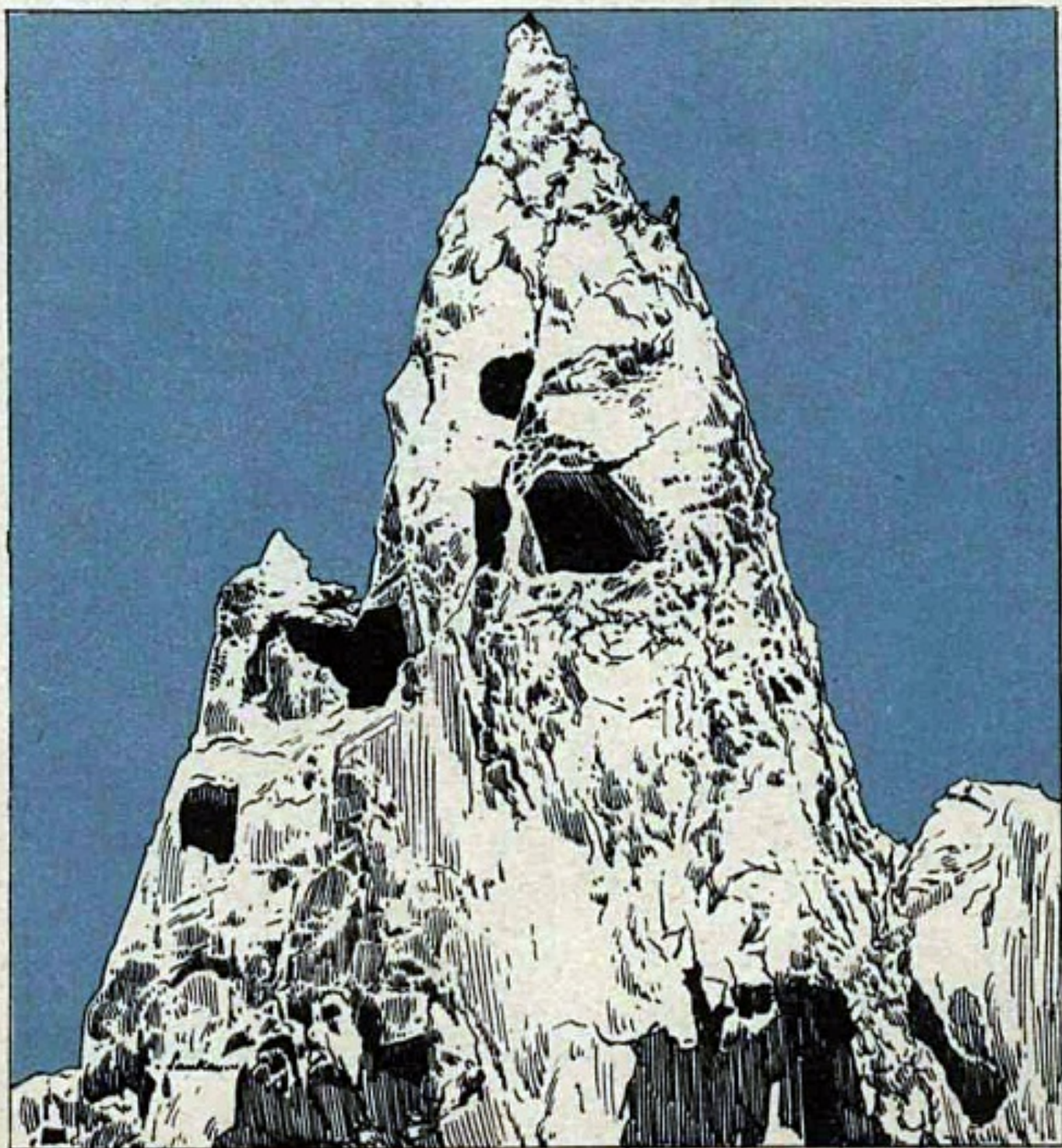
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

नन्हे मुन्ने मुंह तो खोलो !

प्रेषक :
रमेश श्रीवास्तव - रतलाम

Photo by Anant Desai

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

प्यारी गुड़िया कुछ तो बोलो !!

प्रेषक:
रमेश श्रीवास्तव - लखनऊ

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जुलाई १९६६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ मई १९६६ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

मई – प्रतियोगिता – फल

मई के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **नन्हे मुन्ने मुँह तो खोलो !**

दूसरा फ़ोटो: **प्यारी गुड़िया कुछ तो बोलो !!**

प्रेषक: **रमेश एच. श्रीवास्तव,**
पो. लखना, जि. इटावा (उ.प्र.)

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

दिलीप, दिलीप, वहाँ दुर्घटना हो गई। चलो, हम लोग जाकर देखें।
धड़ाम
दिलीप और उसके साथियों ने दुर्घटना के समय मदद की
देखो, लारी उलट गई है। ड्राइवर कहाँ है?
इस अँधेरे में कुछ भी साफ़ दिखाई नहीं पड़ता—जाकर टॉर्च लाना ही पड़ेगा।
ड्राइवर को चोट आई है और इसका माल बिखर गया है।
मैं इसकी मदद करता हूँ, इस बीच तुम लोग बोरियाँ उठा लो।
दिलीप, हमें यह 'एवरेडी' टॉर्च दो!
ड्राइवर की किस्मत अच्छी है—इसे ज्यादा चोट नहीं आई है।
शुक्रिया है लड़को, तुम्हारी ऐसी मेहरबानी के लिये। तुमने मेरे माल को भी बचा लिया।
हमें शुक्रिया न दीजिये; दीजिये 'एवरेडी' टॉर्च को।